भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 6 | अंक 13 | उदयपुर गुरुवार 15 जुलाई 2021 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

सुन्दर है स्वर्ग, श्रेष्ठ सुरपुर, उदियापुर सबसे सुन्दरतम

क्या वाकई इतना सुन्दर है उदयपुर! आजादी के पहले जब यहां सामन्तों का शासनाधिकार था तब भी यह बड़ा नामवरी लिए था। मेवाड़ की राजधानी के रूप में सौलह बत्तीसों का यहां माना हुआ राज रहा। सौलह प्रमुख और बत्तीस उप प्रमुख ठिकानों के ठाकुरों उमरावों के बीच यहां के खमाघणी अन्दाता जो दृढ़ राखै धर्म को तिहि राखै करतार के भरोसे राजकाज की परमार्थहितकारिणी प्रवृत्तियों के साथ प्रजा हितैषी बने रहे।

हमारे लिए इससे बड़ी खबर दूसरी नहीं हो सकती कि हमारा उदयपुर शहर विश्व के सौलह सर्वाधिक खूबसूरत शहरों में जड़ित हुआ है। प्लेनेट डी की ट्रेवल सूची में विश्व का चौथा और देश का पहला एकमात्र नाम उदयपुर का है। नामचीन एजेन्सियों द्वारा ऐसे सर्वे पहले भी हुए हैं। इसके लिए हमें किस पर नाज है? हम किस पर इतरा रहे हैं? आजादी के बाद सरकार ने विकास के जो पायदान बनाये, वह तो उन्हीं-उन्हीं पर स्वाभाविक है, अपना ढोल पिटेगी पर जरा पीछे मुड़-झांक कर देखें तो वह नजारा जो हमें धरोहर और विरासत के नाम पर हमारे बड़ेरों ने हमें संस्कारित कर सौंपा वह कम चौंकाने वाला अचरजकारी एवं इतिहास की आंखें कम चौड़ी करने वाला नहीं है। आइये, उस समै को दृष्टिपात करें।

पुराना उदयपुर एक विशाल परकोटे, शहरकोट में बन्द था जो समयबद्ध खुलता-बन्द होता था। शहर की बसावट अनेक नामा बसावटी अलियों-गलियों, चढ़ते-उतरते घाटे-घाटियों, ऊंचाई पर अवस्थित टेकरियों-टिम्बों, सर्पाकार खिसकती सहरियों-ओलों, सावचेत करते खुर्रे-हाटे, चौहट्टे-चौगान, कला-कारीगरी में बेजोड़ हवेलियां, अजब-गजब महल-दरवाजे, कामगारों की बस्तियां वाड़े-वाड़ी और भी कई नामों की बसावट-बस्तियां।

शहर की सुरक्षा कभी नौ पोलों-पिरोलों में प्रतिष्ठित थी- सूरजपोल, उदियापोल, चांदपोल, हाथीपोल, कोलपोल, दण्डपोल, किशनपोल, अम्बापोल जैसे सार्थक अर्थवाची नाम लिए थीं। अक्षम्य अपराधी को आजीवन देश निकाले का दण्ड देने के लिए दण्डपोल का खिड़कीनुमा दरवाजा खोल दिया जाता था।

बकलम शायर डॉ. इक़बाल 'सागर', 'ऐसे दण्डधरी को काली पोशाक पहना, आधी मूछ, आधी दाढ़ी और आधा सिर भदर कर, कालिख पोत, खच्चरनुमा गधे-घोड़े पर उल्टा बिठा, ढोल वादन के साथ प्रजाजन की थूं-थूं थूंकते थूंक की साक्षी में सदा-सर्वदा के लिए दण्डपोल के बाहर भयंकर जंगल में लावारिश छोड़ दिया जाता था।' ऐसा नजारा इक़बालजी ने देखा जो यहीं के निवासी हैं पर सन् 1958 में जब मैं उदयपुर आया तब मैंने भी वह दण्डपोल तो देखी है।

ऐसी उपलब्धियां और कई रहीं। पीछोला के किनारे विविधनामी घाटों के कथा-किस्से बड़े रोमांटिक हैं- गणगौर घाट, नाव घाट, लाल घाट, बंशी घाट, हनुमान घाट, रोवणिया घाट, बारी घाट। महाराणा सज्जनसिंह ने पीछोला में गणगौर पर नाव की सवारी प्रारम्भ की। गीत है- 'हेली नाव री असवारी सज्जन राण आवे छै।' विविध किस्म के गुलाबों के लिए गुलाबबाग तथा ऊंची पहाड़ी पर सज्जनगढ़ बनवाया। पहला छापाखाना सज्जन यंत्रालय और राजकीय पत्र प्रारम्भ किया।

उनसे पूर्व महाराणा भीमसिंह के समय कवि पद्माकर गणगौर की सवारी देखने मेहमान हुए। जैसी काठ की बनी अच्छे नाकनक्श और शृंगारयुक्त गणगौरें थीं वैसी ही खूबसूरत नाकनक्श वाली हमशक्ल गोरियां-गणगौरें देख वे चकित हो देखते ही रह गये। साक्षी देती एक छन्द की यह पंक्ति- 'गौरन में कौनसी हमारी गणगौर है?' यहां एक यति द्वारा मंत्रबल से उड़ाकर लाया गया भूत महल है तो दैत्यों की एशगाह रही दैत्य मगरी भी। सर्वाधिक शिकारें करवाने और स्वयं करने वाले राजदरबारी तुलसीनाथ धायभाई हुए तो जादुई करिश्मों के सिरमौर लाला गिरधारीलाल ने बड़ा नाम कमाया। सज्जनसिंह के बाद महाराणा फतहसिंह ने फतहसागर बनवाया। बहुत ही प्राकृतिक खूबसूरती से लकदक एक विशाल सरोवर। चारों ओर रिंग रोड़। ऐतिहासिक मोतीमगरी के किनारे, शहर के बीचोंबीच। देखने काबिल पाल। किनारे का मुम्बइया बाजार, सैलानियों की रात्रि रंजित सुखद यात्रा की सुनहरी छवि का दरसाव, नाव की सैर, घोड़े-ऊंट की सवारी का लुत्फ। पीछोला भरने पर उसका पानी स्वरूपसागर होते फतहसागर को ठाठें देता, ओवरफ्लो होने पर आयड़ को लमछराता उदयसागर। फिर महाराणा राजसिंह निर्मित एशिया की सबसे बड़ी नौ नदियों और निन्याणु नालों का पानी पचाये विशाल जयसमंद झील। यहीं पहाड़ी पर बना रूठी रानी का महल।

मोतीमगरी पर प्रतापकालीन महल। जब बात फैल गई कि प्रताप का राजकोष खाली होकर वे भटकन की स्थिति में हैं तब भामाशाह ने इन्हीं महलों में सामन्तों को आमंत्रित कर ढाक निर्मित पत्तल-दोने पर भोज के साथ एक-एक दोना भर मोती परोसे सो मोतीमहल नाम पड़ा। यहीं अकबर फकीर वेश में आया था। यहीं जंगली घास कोदो की रोटी वनबिलाव ले गया था।

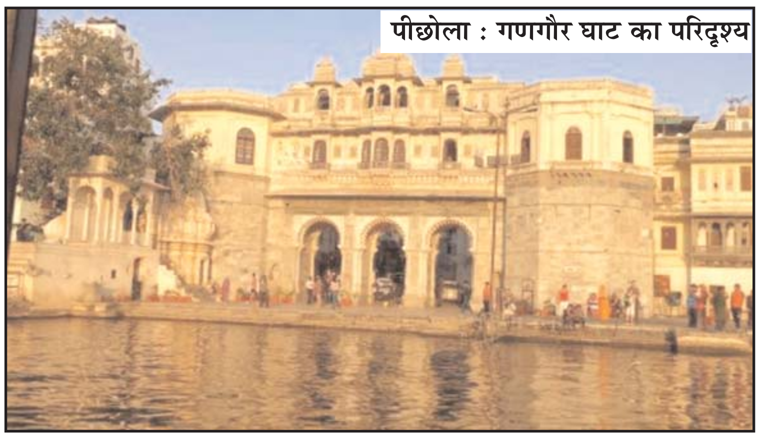

पीछोला : गणगौर घाट का परिदृश्य

उदयपुर के चारों ओर चार तीर्थधाम। महाराणा भगवान एकलिंगनाथ के उपासक। एकलिंगजी मन्दिर की स्थापना। प्रताप ने इन्हीं के श्रीचरणों में अपना राजपाट न्यौछावर कर दीवानी धारण की तबसे उत्तराधिकारी राणा एकलिंगजी के दीवान हैं।

एकलिंगजी के आगे राजसमंद, महाराणा राजसिंह द्वारा राजनगर बसाकर राजसमंद झील की स्थापना की। इसकी नौ चौकी पाल स्थापत्यकला का अद्भुत नमूना। इसी पाल पर स्थापित राजप्रशस्ति महाकाव्य को उत्कीर्ण करती 25 शिलाएं। विश्व का यह सबसे बड़ा शिलालेख और राजनगर राजसमंद के नाम से स्वतंत्र जिला।

उदयपुर आदिनिवासी भीलों का बाहुल्य लिये। हल्दीघाटी के युद्ध में भीली सैनिकों का अपने आयुध, गोफण तथा तीरकमान द्वारा मगरियों से दृश्य-अदृश्य मारक पद्धति से प्रताप का विश्वसनीय साहसिक साथ। इसी कारण मेवाड़ के राजचिन्ह में एक तरफ रजपूत तथा दूसरी तरफ भील नायक।

सूर्य वंशधर प्रताप स्वाभिमानी शौर्य का, देश के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने वाला यश:प्रतापी अजेय योद्धा। जहां बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं ने अकबर की अधीनता स्वीकार करली वहां प्रताप ने सदैव अपने स्वातंत्र्य की रक्षा की। यह धारा बाद में भी चलती रही। जब देश आजाद हो गया तब रियासतों का एकीकरण कर एक राजस्थान बनाने का प्रस्ताव ले सरदार वल्लभभाई पटेल आये तो सबसे पहले महाराणा भूपालसिंह ने अपनी स्वीकृति दी इसीलिए उन्हें 'महाराज प्रमुख' का सम्बोधन प्रदान किया। दानवीरों में भामाशाह का तो नाम ही दानवीर का पर्याय बना हुआ है।

आदिवासी कौम सदैव से ही अपने स्वामी के प्रति बड़ी समर्पण भाव लिए वफादार रही है। प्रताप में बहुत कुछ चारित्रिक विशेषताएं उन जैसी रहीं। महाराणा के हर काम में आदिवासी की मुख्य भूमिका देखी जा सकती है। महाराणा द्वारा अनेक सुविधाएं, सहयोग देने पर भी उन्होंने लेने में सदैव आनाकानी ही की। कई गीत इसके साक्षी हैं। एक गीत में महाराणा भील सरदार को अपने महल देखने को कह रहे हैं। संवाद का प्रारम्भ देखिये-

ओ भीलजी, ओ भीलजी म्हारा म्हेलां नै देखण आवजो
ओ राणाजी, ओ राणाजी आपरा हेलां रो कई देखणो
अस्यो म्हारे छापरिया रो छाव सा

इसी प्रकार राणा उसे तंबुड़ा देखण, हाथियों का झुण्ड देखण की बात कहते हैं। उत्तर में भीलजी तंबू की बजाय घाघरे का घेर, हाथियों की बजाय भैंसियों का ठाण कह आत्मसंतोषी बना रहता है।

अब जरा आधुनिकता की विकास की गत में आयें। समय के अनुसार बदलाव जरूरी है पर वह उद्देश्यपरक, लक्ष्यबद्ध आमजन के लिए उपयोगी होना चाहिये। राजनीतिक गंध याकि अपनी निजी प्रतिष्ठा और बदलाव की भावना रहित होना चाहिए। लोकतंत्रीय शासन पद्धति जनता की, जनता द्वारा, जनता के लिए होती है पर धीरे-धीरे वोट की राजनीति ने कई तरह की विसंगतियां पैदा कर दी हैं। बावजूद इसके उदयपुर ने विकास के अनेक चरण स्थापित किये हैं।

सन् 1952 में देवीलाल सामर ने भारतीय लोककला मण्डल की स्थापना कर पिछड़ी जातियों में परम्परागत कलासंस्कृति के पुनरूद्धार, पुनर्प्रतिष्ठा, पुनर्मंचन, संरक्षण तथा रखरखाव के लक्ष्य को अपनी जीवनधर्मिता का एकमात्र सर्वोपरि संकल्प बनाया।

उन्होंने सबकुछ मुझे साथ रखकर पहलीबार लोककलाकार शिविर, लोकगीत समारोह, लोकानुरंजन मेला, लोक शिल्पहाट, लोककला संगोष्ठी, कठपुतली समारोह, लोककला संग्रहालय तथा लोकमंचीय प्रदर्शन प्रारम्भ किये। पूरे देश और विदेशों में अपनी कलाधर्मी प्रस्तुतियों से देश की पुनर्प्रतिष्ठा स्थापित की। कठपुतलियों में विश्व का सर्वोच्च कीर्तिमान पाया। अनेक विदेशी-देशी अध्येता आये। उनके साथ मैंने भी राजस्थान के अनेक अंचलों का सर्वे किया। कलाकारों से मिल बैठकर चर्चा की। उन विधाओं पर सैंकड़ों बार लिखा और अब भी वही काम पकड़े हूं।

यह न भूलें कि यह शहर लोकचित्त का चितेरा रहा है। सामरजी ने उसके उसी चित्त को आलोकित किया है। मैं पहलीबार गवरी जैसे विषय को लेकर पीएच. डी. करने वाला 1967 का उदयपुर विश्वविद्यालय का पहला छात्र भी होने का गौरव लिए हूं।

पर्यटकों को आकर्षित कर राजस्थान बुलाने का सरकार का हेला 'पधारो म्हारे देश' लोकगीत माण्ड की ही पंक्ति 'केसरिया बालम आवोनी पधारो म्हारे देश' है जिसे अल्लाजिलाईबाई ने पूरे विश्व में गुंजित किया। यहां के नाव घाट की राजदरबार की गायिका लच्छुबाई ने मुझे बताया कि अंतिम महाराणा भूपालसिंह ने सबसे पहले बम्बई भेजकर उनकी रेकार्डें बनवाई। उनके साथ वरदीबाई, कजोड़ीबाई, फत्तीबाई भी थीं। गीतों में घूमर, जलो, छैल भंवर के साथ अन्दाता हजूर री भावना गीत थे। एक गीत-

'राणाजी म्हैं तो कई य न मांगू
सोनो नी मांगू, रूपो नी मांगू
नी मांगूं नवसर हार
पीछोला रो पाणी मांगू, उदियापुर रो वास।'

यहां की नारायणीबाई, जानकीबाई से कला मण्डल ने अपनी भरपूर सेवाएं लीं। देश-देशान्तर की यात्रा का जोग भी उन्हें बड़ा सुख देता रहा। उनके बाद में यह गीत लता मंगेश्कर को इतना पसंद आया कि उन्होंने भी अपने स्वर में इसे गाया। वे अज्ञात बन उदयपुर कई बार आईं। कलामण्डल भी आईं।

आज पीछे झांकता हूं तो लगता है, वह समय था जब लोककला और लोककलाकार तथा उससे जुड़े पढ़े-लिखे भी बहुत सम्मान की दृष्टि नहीं पाते थे। आज तो कोई विवि ऐसा नहीं जहां लोककलाओं पर शोध नहीं हो रहा हो। ऐसे में मेरे द्वारा चुपचाप शताधिक पुस्तकों का लेखन भरपूर आत्मसंतोष से ही मुझे भरता, रिक्त होता, पुन:-पुन: भरता मौजमस्ती दे रहा है।

- डॉ. महेन्द्र भानावत

पोथीखाना

श्री राम चरित मानस की तर्ज पर श्री हनुमान चरित मानस

भक्त शिरोमणि महाकवि तुलसीदास गोस्वामी प्रणीत राम चरित मानस की यह प्रभावना है कि सम्पूर्ण विश्व में भारतीयता की पहचान भगवान राम के मर्यादा पुरुषोत्तम रूप में ख्यात-प्रख्यात है। इसमें गोस्वामीजी ने राम-भक्त हनुमान के चरित को राम के प्रति उनकी स्वामीभक्ति, समर्पण-निष्ठा, शौर्यजनित बल-बुद्धि का पराक्रम, सौहार्द्रजनित विनयशीलता, कठिन से कठिन कार्य को साहस एवं निर्भीकतापूर्वक कर गुजरने की अकूत क्षमता जैसे कई गुणों तथा विशेषणों से महिमामण्डित किया है।

प्रस्तुत ग्रंथ श्री हनुमान चरित मानस में रचनाकार कैलाशचन्द्र शर्मा ने रामचरित मानस की ही तर्ज पर राम-भक्त शिरोमणि हनुमानजी के व्यक्तित्व को सर्वांग सुन्दर अखण्ड रूप में वर्णित करने का अभिनंदनीय उपक्रम किया है जिसकी देश के धर्मजीवी चिंतकों, विद्वानों, धर्माचार्यों, आराधकों तथा वरेण्य साहित्यिकों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

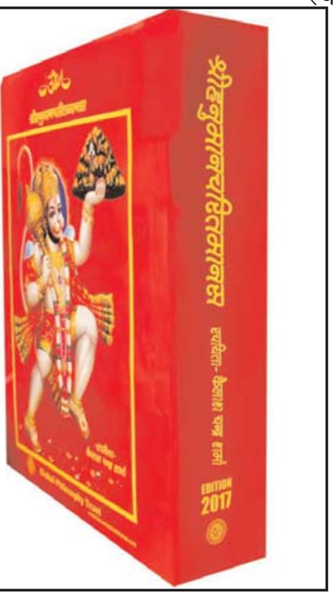

ग्रंथ कुल सात काण्डों में विभक्त है। वंदना काण्ड में देवाधि वंदना, ग्रंथ का स्वरूप, प्रभाव, पठन की पात्रता, ग्रंथ नायक का नाम, निरूपणा एवं वंदना तथा श्रीराम प्रभु के जंगम मंदिर स्वरूप हनुमानजी की यशस्वीता का बखान किया गया है। बालकाण्ड में मंगलाचरण, हनुमानावतार की पृष्ठभूमि तथा तत्वदर्शना, प्राकट्य, सूर्य ग्रास लीला, बालचरित्र, शिक्षाग्रहण के अलावा भगवान शिव के साथ अयोध्या में राम-भेंट का बड़ा ही संश्लिष्ट वर्णन है।

किष्किंधा काण्ड में सूर्य एवं रामजी की इच्छानुसार सुग्रीव सुरक्षा हेतु हनुमानजी का किष्किंधा गमन, श्रीराम द्वारा हनुमान सहस्त्र नामोद्भव एवं पाठ, राम से ग्रंथ नायक का संबंध-स्वरूप, ऋष्यमूक पर्वत पर राम-लक्ष्मण से भेंट, सुग्रीव मैत्री तथा किष्किंधाभिषेक का सरस एवं मनोहारी रूप दिग्दर्शित है।

सुन्दरकाण्ड इस ग्रंथ का हृदय-मेरु है। इसमें हनुमानजी द्वारा राम-मुद्रिका लेकर सीतामाता की खोज करना, अंगद को उद्बोधन देना, जाम्बवंत द्वारा हनुमानजी को अपने बल का स्मरण कराना, समुद्र लांघ लंकावलोकन करना, विभीषण तथा सीता से भेंट करना, रावण-दुर्व्यवहार से लंका-दहन करना, सीता से चूड़ामणि ले राम को सन्देश देना जैसे प्रसंग बड़े ही हृदयद्रावक तथा भावविभोर करने वाले हैं।

विजय काण्ड में लंका विजय हेतु समुद्र पर सेतु निर्माण करना, रण में रूद्र रूप धारण करना, राम-लक्ष्मण की मुक्ति हेतु गरुड़ को लाना, राम-रावण युद्ध, कुंभकरण का वध, मेघनाद से द्वन्द्व युद्ध, संजीवनी लाना, पाताल गमन, अहिरावण वध, राम-रावण युद्ध में रावण का पराभव, श्री रामेश्वर एवं श्री हनुमदीश लिंग स्थापना जैसे प्रसंग बड़े ही शौर्य तथा पराक्रमपरक बनकर उभरे हैं। हनुमानजी के वीरोचित भावों को बड़े उदात्त रूप में प्रस्तुत किया गया है।

उत्तरकाण्ड में राम का राजतिलक, राम-सीता के प्रति हनुमानजी का समर्पण स्वरूप, सीता तथा राम द्वारा परमतत्व का उपदेश, शनिदेव द्वारा हनुमानजी की स्तुति, राम-दुर्वासा मिलन, राम द्वारा हनुमान का गुणगान, सप्त ऋषि, नारद तथा भमदेव द्वारा हनुमान स्तुति जैसे प्रसंग द्वारा अकल्पनीय लीला-रूपों का दरसाव हनुमान के सर्वथा अपराजेय स्वरूप को कुशल-कौशल के साथ अभिमंडित करते हैं। इस दृष्टि से रचनाकार ने सर्वतोभावेन दिव्य कल्पनाओं के अभिनव कीर्तिकलश स्थापित किये हैं।

ग्रंथ का अंतिम काण्ड उत्तम काण्ड के नाम से विवेचित है। इसमें तीन सर्गों में कवि ने गीतोपदेश सारामृत, योगवाशिष्ट सार तथा माडूक्य मधुरामृत का अद्भुत माधुर्य दिया है। श्री हनुमान चरित मानस का यह चौथा संस्करण है। इससे पूर्व सन् 2014 में प्रथम, 2015 में द्वितीय तथा 2016 में तृतीय संस्करण प्रकाशित होकर बहुचर्चित हो चुके हैं। ग्रंथ के प्रारंभ में अनेक विशिष्ट व्यक्तियों, विद्वानों, समाजसेवियों तथा जनप्रतिनिधियों की सम्मतियां दी गई हैं जो ग्रंथ की विविधताओं, वैशिष्ट्यों तथा रचनात्मक काव्योपलब्धियों पर सम्यक प्रकाश डालती हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लिखा- 'हनुमानजी सेवा और समर्पण के पर्याय हैं। वे निर्विकार समर्पण की साक्षात् प्रतिमूर्ति हैं। उनका जीवन भक्ति का वो रूप था जिसमें सेवा परमोधर्म बन गया था। वे शक्ति के रूप में लोगों के भीतर नवचेतना का माध्यम हैं।'

भाजपा अध्यक्ष अमित शाह के अनुसार श्री हनुमानजी का जीवन चरित्र सदैव वंदनीय एवं अभिनंदनीय है। एक स्वामीभक्त सेवक, अखण्ड आराधक एवं धर्म-ध्वज वाहक के रूप में वे

जब तक भगवान राम हैं, हनुमानजी का अस्तित्व-वर्धन होता रहेगा और जब तक हनुमान हैं तब तक राम युगयुगीन बने रहेंगे। दोनों का अन्योन्याश्रित संबंध ही भारतीयता का उज्ज्वल एवं पारदर्शी दर्पण है।

सदैव पूज्यनीय हैं। वे अतुलनीय एवं अवर्णनीय हैं। कलियुग में भी धरती पर विद्यमान होकर वे मानव मात्र को त्रितापों से मुक्त कर रहे हैं।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. प्रवण पंड्या की दृष्टि में श्री हनुमानजी के चरित्र एवं मानस की ऐसी गहन, सूक्ष्म, विशद एवं सर्वथा शास्त्र सम्मत प्रस्तुति अन्यत्र दुर्लभ है।

रचयिता श्री कैलाशचन्द्रजी शर्मा ने नाना पुराण निगमागम स्वाध्याय के साथ-साथ अद्वैत वेद एवं परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के सम्पूर्ण वांग्मय को भी आत्मसात कर लिया है। उन्होंने जिस कुशलता, प्रखर प्रज्ञा एवं सहज श्रद्धा के साथ श्री हनुमान चरित मानस प्रस्तुत किया है, वह असाधारण प्रतिभा का प्रमाण है।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के मोहन भागवत की विचारणा में ग्रंथकार ने हनुमानजी के जीवन के विशद प्रसंग तथा उपदेशों का विवेचन आधुनिक देशकाल की परिस्थिति में भी पथ-प्रदर्शक होना बताया कारण कि हनुमानजी के जीवन को विस्तारपूर्वक और सूक्ष्मता के साथ उनकी भक्तिपूर्वक निष्ठा को जानना भारतवर्ष की नई पीढ़ी सहित सभी की अनिवार्य आवश्यकता है।

योगाचार्य स्वामी रामदेव ने इसे एक ऐसा ग्रंथ बताया जिसमें सभी परम्परागत विषयों के साथ-साथ भ्रष्टाचार एवं विचार-प्रदुषण जैसे ज्वलंत समसामयिक मुद्दों के स्वरूप को भी सटीक, सोदाहरण एवं सरल रूपेण प्रस्तुत कर राष्ट्रहित की साधना की है।

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमनसिंह ने ग्रंथ को वर्तमान तथा भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणादायक बताते हुए लिखा- 'हमारी भारतीय संस्कृति में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के भक्त भगवान हनुमान जैसा कोई दूसरा उदाहरण नहीं है। हनुमानजी का संपूर्ण व्यक्तित्व सदाचार, सेवा और समर्पण जैसे कालजयी नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण है।'

इस प्रकार यह वृहद ग्रंथ 7 काण्डों के 3047 विविध छंदों में रूपायित हुआ है। इनमें उत्तरकाण्ड सर्वाधिक 1009 छंदों में विवेचित हुआ है जबकि सबसे कम छंदों वाला प्रथम वन्दना काण्ड है। उसके बाद क्रमश: किष्किंधा काण्ड 149 छंद, बालकाण्ड 180 छंद, सुंदरकाण्ड 379 छंद, विजयकाण्ड 440 छंद तथा उत्तमकाण्ड 770 छंदों में पूर्ण हुआ है। सुन्दरकाण्ड का पाठ करने के लिए उसकी संपूर्ण विधि दी गई है। प्रत्येक छंद का हिन्दी भावार्थ, आवश्यक टिप्पणी एवं विशिष्ट कथा, अंतर्कथा द्वारा हनुमानजी के समग्र अजेय पौरुष को उनके व्यक्तित्व के अनुसार ही रचनाकार ने बड़े मनोयोग से विराट रचनाशीलता के वैभव के साथ स्वर मंडित करने में कोई कसर नहीं रखी है।

भगवान श्रीराम के माध्यम से श्री हनुमानजी देश के प्रत्येक भूभाग तथा अंचल में विविध रूपों में दर्शनीय एवं पूजनीय हैं। बहुत बचपन में हर मंगलवार को मैं भी अपने गांव में साथियों के साथ तालाब की पाल पर बने मन्दिर में हनुमानजी के दर्शन के लिये जाया करता था। उनके चढ़ावे के लिए घर से अच्छी घी-चुपड़ी मोटी रोटी तथा उस पर गुड़ ले जाया करता था।

मन्दिर में हनुमानजी के श्रीचरणों में वह रोटी, जिसे हनुमानजी का रोट कहते, चढ़ाकर वहीं उनके समक्ष आंख मींचकर उनका ध्यान करता और फिर उनके चरणों का सिन्दूर नाखून से खुरच अपनी चोटी में लगाता जिसे हनुमानजी की मली कहते। चोटी में लगाने से तात्पर्य हनुमानजी हमारे पर महरबां हो गये हैं, यह सोच मैं वहीं अपनी भुजा के मांसल को फुलाता और महसूस करता कि मुझ में भी हनुमानजी जैसी शक्ति प्रविष्ट हो गई है। परीक्षा के दिनों में खासकर जिस दिन पेपर शुरू होता उसके एक दिन पूर्व संध्या-रात्रि को तो रोट चढ़ाता ही चढ़ाता और उत्तीर्ण होने का आशीष मांगता।

स्कूल में वार्षिक समारोह में कई बार मैं हनुमानजी का स्वांग लाया और उन जैसी उछलकूद तथा हा-हूक से लोगों पर अच्छा प्रभाव देकर खूब शाबाशी पाई। हनुमानजी का प्रभाव गांवों और कस्बों में ही नहीं, शहरों में तो और अधिक रूप में देखा जाता है। गत 30-40 वर्षों का ही यदि हिसाब लगाया जाय तो देश के प्रत्येक गांव-शहर में हनुमानजी के स्थानों की आशातीत वृद्धि हुई है। कई रूपों में हनुमानजी की प्रसिद्धि ही नहीं, प्रतिष्ठाजनित प्रतिमाएं भी बनाकर उनका यश विस्तार हुआ है।

ऐसे भक्त बहुतेरे मिलेंगे जो प्रतिदिन प्रात: हनुमानजी के दर्शन कर ही अपनी दिनचर्या प्रारम्भ करते हैं। कई लोग इष्ट रूप में हनुमानजी का नावां गले में धारण किये रहते हैं। मेलों-ठेलों में पुरुष अपनी भुजा तथा महिलाएं कलाई पर हनुमानजी का गुदना गुदवाकर सर्वप्रकारेण निर्भय तथा निश्चिंत हुआ मानती हैं।

कई घरों में हनुमानजी के मन्दिर-मंदरियां अथवा तस्वीर का जड़ाव मिलेगा। ब्याह-शादियों में भी घर की दीवालों पर जो चितराम कोराये जाते हैं उनमें हनुमानजी को एक हाथ में पहाड़ उठाये पवन वेग से उड़ते हुए दिखाया जाता है। कई रूपों में हनुमानजी की मनौतियां बोली जाती हैं। उनकी आंगी धराई जाती है और रजत-स्वर्ण के सिक्कों पर उनकी अभिराम छवि अंकित कराई जाती है। समझेबुझे लोग हनुमान मंत्र का ताबीज बनाकर तथा झाड़ागर हनुमानजी का नाम स्मरण कर झाड़ु से झाड़ा डालते हुए रोगियों की कई तरह की बीमारियों का शमन करते हैं।

जब तक भगवान राम हैं, हनुमानजी का अस्तित्व-वर्धन होता रहेगा और जब तक हनुमान हैं तब तक राम युगयुगीन बने रहेंगे। दोनों का अन्योन्याश्रित संबंध ही भारतीयता का उज्ज्वल एवं पारदर्शी दर्पण है।

मुझे विश्वास है कि प्रस्तुत ग्रंथ हनुमानजी की यश-कीर्ति को पूरे विश्व में अभिमंडित कर राम चरित मानस की तरह ही हनुमान चरित को जन-जन का मानस हार बनायेगा।

श्री हनुमान चरित मानस, रचयिता -कैलाशचन्द्र शर्मा, प्रकाशक-ग्लोबल फिलोसोफी ट्रस्ट, आरजेडएच-4 ए, स्ट्रीट नं. 1, राजनगर-11, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली-110045, पृष्ठ 1088, चतुर्थ संस्करण, मूल्य 500 रूपये। -म.भा.

श्री कृष्णप्रतापसिंह स्मृति व्याख्यानमाला, 12 विभूतियों का सम्मान और तीन पुस्तकें लोकार्पित

ईश्वर की भक्ति में रचागया साहित्य संस्कृत से लेकर आधुनिक भाषाओं तक में आजतक प्रकृति से ओत-प्रोत रही। आवश्यकता है उस दृष्टि की आँखें खोलने की। इसीलिए महामारी, प्रलय, प्राकृतिक आपदाओं ने चेतावनी दे दी है। ये विचार श्री कृष्णप्रतापसिंह स्मृति व्याख्यानमाला में विभिन्न वक्ताओं ने व्यक्त

किये। कृष्णप्रताप-विद्याविन्दु लोकहित न्यास, शिवसिंह सरोज स्मारक समिति एवं अखिल भारतीय साहित्य परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित समारोह के दौरान पत्रकारिता, साहित्य, पर्यावरण, कला सहित विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान के लिए 12 विभूतियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर संत विवेक स्मारिका, डॉ. विद्याविन्दुसिंह की बाल-कविताओं का संकलन 'गुल्ली डंडा रेत में' तथा डॉ. करुणा पाण्डे का कहानी संग्रह 'अधूरा कैनवास' का लोकार्पण हुआ।

समारोह के अध्यक्ष श्रीधर पराड़कर ने वृक्ष, जीव-जन्तु के प्रति मानवीय कर्तव्यों के अनुपालन पर जोर दिया। प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने प्रकृति के विभिन्न तत्वों तथा प्रो. मौलि कौशल ने प्रकृति के मूल स्वरूपों की रक्षा का दायित्व जनजातियों तथा लोक-परम्पराओं में मिलना बताया।

पद्मश्री मालिनी अवस्थी, अरविन्द चतुर्वेदी, डॉ. पूर्णिमा पाण्डे, डॉ. योगेन्द्रप्रतापसिंह, डॉ. कन्हैयासिंह, आनंदवर्द्धनसिंह, डॉ. एस. शेषारत्नम, शशिप्रकाशसिंह, राकेश शर्मा, यतीन्द्र मिश्र, डॉ. गायत्रीसिंह, अनिलकुमार पाण्डे आदि ने अपनी बात रखी। संचालन डॉ. करुणा पाण्डे, डॉ. भारतीसिंह एवं डॉ. एस.के. गोपाल ने किया।

सम्मान पाने वाली विभूतियां थीं- के. विक्रम राव, प्रो. हरिशंकर मिश्र, शिवशरण दीक्षित, जया विजया श्रीवास्तव, डॉ. कैलाशदेवी सिंह, श्रुति मालवीय, ज्योति किरन रतन, प्रो. उषा बाजपेयी, डॉ. सत्यवीरसिंह, सूर्यभानुसिंह गौतम, राजेन्द्रनाथ बक्शी तथा सूसम्मा जॉय। **-डॉ. विद्याविन्दुसिंह, लखनऊ**

स्मृतियों के शिखर (127) : डॉ. महेन्द्र भानावत

लोकजीवन में कानोंकान खबर (2)

गांव बांभी :

रेत के टीलों के एक गांव में सैंकड़ों ढाणियां हैं। हर ढाणी में यदि व्यक्तिगत सम्पर्क से सूचना दी जाए तो कई दिन लग जाते हैं लेकिन गांवबांभियों को हेला विधि की परम्परा से कुछ ही देर में हर घर सूचना पहुंचाने में महारत हासिल थी। न मोटर साइकिल की जरूरत और न जीप की।

यदि गांव के चहुंओर रेतीले टीले और ढाणियां बसी हैं तो चार-पांच रेतीले टीलों पर बारी-बारी से खड़ा होकर गांवबांभी जब दाहिने हाथ की हथेली को मुंह के किनारे रखकर ओठों को गोल करता हुआ आवाज निकाल पूरे मुंह को खोलकर संदेश प्रसारित करता तो संदेश प्रेषित करने की शैली मीलों लम्बी दूर तक आवाज साफ-साफ पहुंचा देती थी। ऐसे घर-घर, ढाणी-ढाणी संदेश पहुंच जाता था और लोग समय पर एकत्रित हो जाते थे।

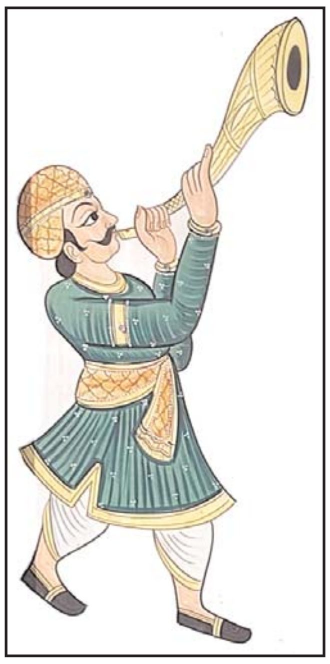

बाड़मेर जिले के शिव तहसील के गांवों में लम्बे समय तक शिक्षक के रूप में कार्य कर चुके तनसुखदास तापड़िया के अनुसार बड़े-बड़े गांवों में हेला देने का काम मांगणिहार वर्ग ढोल की थाप के साथ भी करता था। हेला देने वाले रेत के टीलों के साथ-साथ ऊंचे पेड़ों तथा पहाड़ियों पर चढ़कर भी हेला देते थे। इन सब कार्यों के बदले गांवबांभियों को गांव की हर ढाणी, हर घर से अनाज, कपड़े, घरेलू साधन रूप में बांभ (हिस्सा) मिलता था। यहां तक कि खेती भी लोग करके देते थे। लेकिन आज गांवबांभियों का अस्तित्व संकट में आ गया है। गांवबांभियों की जगह सूचना के अन्य साधनों तथा पटवारियों, ग्रामसेवकों, प्रिंट और टेलीफोन, मोबाईन मीडिया ने ले ली है।

दूरदराज की ढाणी में अकेली औरत निर्भय होकर रहती थी। आजादी से पूर्व रेतीले इलाके में डाकुओं का आतंक रहा तो आजादी के बाद चोरियों की घटनाएं इस क्षेत्र में बढ़ीं। डाकुओं को आता कोई देख लेता तो घर से हेला देने की भयंकर आवाजें निकालता जो दूसरी ढाणी तक पहुंचा देतीं। दूसरी ढाणी के संदेश की पुनरावृत्ति होती तो तीसरी ढाणी तक पहुंच जाती। इस तरह संदेश चारों ओर पहुंच जाता और लोग अपने-अपने हथियारों सहित सतर्क हो जाते।

ऐसी स्थिति में लोग या तो डाकुओं ने जिस ढाणी को घेरा है वहां पहुंच जाते या डाकू या चोर जिस तरफ भागे उस तरफ उन्हें पकड़ने-मारने के लिए कूच कर जाते। इस तरह 'हेला' मीलों लम्बी दूरी तक लोगों को अविलम्ब संदेश पहुंचा कर सुरक्षित कर देता। अब न तो वैसा खानपान रहा और न ही हेला देने वाले वैसे ताकतवर लोग। अब लोग अपनेआप को ज्यादा असुरक्षित अनुभव करने लगे हैं।

नूता देना :

मेवाड़ में ओसवाल साजनान में यह काम सेवग के जिम्मे रहा। हमारे गांव कानोड़ में सगाई-सगपण, ब्याह-शादी तथा मौत-मरण पर बुलावे का काम सेवग वरदीचंद दादा के जिम्मे था। उनका स्वभाव तथा वाणी माधुर्यभाव लिये थी। उनके शरीर पर आलस्य का जरा भी लेप नहीं था। उपस्थितों को हर नेगचार की जानकारी दिये रहते थे। प्रत्येक घर से बुलावा करने अर्थात आग्रहपूर्वक निमंत्रण देकर कार्यक्रम में उपस्थित होने को नूता देना कहते थे। आपसी संबंध के हिसाब से नूता दिया जाता था।

प्रीतिभोज अथवा जीमने के लिए मुख्यत: तीन तरह के नूते होते। जिस घर से केवल पुरुष वर्ग को बुलाना होता वह 'पागड़ीबंध' नूता कहलाता। इसमें महिलाएँ वर्जित थीं। यहां तक कि बालबच्चे भी नहीं आते थे। परिवार के सभी सदस्यों को आमंत्रित करने के लिए 'हाव हंगरी' नूता यानी समस्त परिवारजन सहित जीमने बुलाये जाते थे। इस नूते में उस परिवार में आये अतिथि मेहमान सम्मिलित नहीं रहते थे। मेहमान सहित नूता देने के लिए 'पाइ पामणा हूदी' नूता दिया जाता था जिसका आशय था परिवार में उपस्थित समस्त मेहमान भी जीमने के लिए आमंत्रित हैं।

विधवा महिलाएँ भोजन में सम्मिलित नहीं होती थी। जापे वाली महिलाएँ भी जाने में सक्षम नहीं होती थीं। जिनके बाल बच्चा होने को है अथवा हो गया है, उन महिलाओं के लिए 'परूसा' रखा जाता था। परूसे में सबके लिए जो विशिष्ट भोजन बना है, वह रखा जाता था। इस भोजन में अमूमन तलमा पूड़ी या फिर झकोलमा पूड़ी, चने की दाल, मिठाई में बेसन की चक्की, मोतीचूर के लड्डू, नमकीन में सेव जिसे मरमरी कहते तथा अमचूर होता। मौत मरण के मौके पर मालपुए बनाये जाते थे। परुसा रखने का काम कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के जिम्मे रहता जो परूसा रखने वाले कहलाते। इनके पास ऐसी महिलाओं तथा ऐसे घरों की सूची रहती।

मेरी बड़ी बहिन 98 वर्षीय सोहनबाई ने इस संबंधी बहुत सारी जानकारी देते 20 जनवरी 2018 को बताया कि इस सेवा के लिए सेवग को कोई मेहनताना देने का प्रचलन नहीं था। खुशी से जो कुछ बन पड़ता, वह कोई दे देता। कोई न भी देता पर वरदीचंद दादा ने लम्बे समय तक यह कार्य किया जो सबके बीच बड़े सुनामी रहे। उनके बाद उनके योग्य सुपुत्र गोरधनलालजी ने यह कार्य संभाला। वे सरकारी शिक्षक, मास्टर साब थे सो सभी उन्हें माड़साब कहते थे।

बड़ी बहन को जीजां, बड़े भाई को दादाभाई, पिता को काकासा, दादा को बासा तथा माता को बाई कहने का प्रचलन रहा। अन्य जाति से हमारे प्रत्येक परिवार के साथ नाई, धोबी, कुम्हार जुड़ा रहता जो आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति तथा अपने-अपने जिम्मे का कार्य संपादित करता। ये आईत कहलाते। इन्हें मौसम के अनुसार धानचून, पहनावा तथा खर्ची दी जाती।

डूंडी पीटना :

सामंतीकाल में शासनकर्त्ता रावजी की ओर से कभी-कभी कोई महत्वपूर्ण सूचना पूरे गांववालों को पहुंचानी पड़ती थी तब सेणा द्वारा डूंडी पिटवाई जाकर खबर प्रेषित की जाती थी। मैं बहुत छोटा था तब एकबार मूसलाधार वर्षा हुई। तीन दिन तक लगातार पानी बरसने के कारण पूरे गांव में पानी-पानी हो गया। मुख्य कमलवाले तथा जोइरे तालाब का ओटा इतना जबर्दस्त चला कि त्राहिमाम मच गया। ऐसी स्थिति में रावजी की ओर से डूंडी पिटवाई गई- 'खबरदार! सावधान!! पूरा गांव जलमग्न हो गया है। कोई घर से बाहर नहीं निकले। जो निकलेगा तो राजदंड का भागी होगा।'

मैंने कमलवाले तालाब का पूरा ओटा देखा है। इसके बाद उतना पानी मैंने कभी नहीं देखा। तब गांववालों ने एक आदिवासी को बुलाकर टोटका भी करवाया था ताकि जल देवता अपनी लीला समेटे और सबको तबाही से बचाये। धीरे-धीरे ओटे का पानी कम हुआ और सबने चैन की श्वांस ली।

साड़ी के पल्लू से हेला :

पहले का जमाना बड़े कठिन संघर्ष का था। परिवार के भरणपोषण के लिए पति को परदेश तक जाना पड़ता था। संवाद के, बातचीत के तब कोई साधन नहीं थे। विशिष्ट त्यौहार-उत्सव पर पति का साथ रहने से ही पत्नी का हर्षोल्लास व्यक्त होता था। अन्यथा उत्सवों की शुष्क श्रीहीन रंगीनियों के साथ पत्नी का जीवन भी शुष्क, बेरंग तथा अनमना ही रहता था। गणगौर तो मुख्यत: सुहाग का ही पर्व रहा है। पति के होने पर ही पतिव्रताओं की खुशी व्यक्त होती थी। ऐसी स्थिति में कुछ दिन पहले से ही स्त्रियां अच्छे वस्त्राभूषणों से सज्जित हो किसी स्थान विशेष, बाग-बगीचों, बाड़ियों तथा कुंजों में एकत्र होकर समूह रूप में आमने-सामने कतारबद्ध हो साड़ी का पल्ला झालती हुई पति को घर बुलाने का आह्वान करती थी। इस अवसर पर गाये जाने वाले गीत इसके साक्षी हैं।

मेरे गांव कानोड़ में जहां अभी कचहरी है, वह स्थान आजादी से पूर्व गांव से बाहर था जिसे 'पीरुवला' कहा जाता था। अपनी नन्ही उम्र में मैं भी अपनी मां के साथ गया था और वह दृश्य अभी भी मेरी आँखों में तैर रहा है जब महिलाओं को बड़े ही मधुर किंतु कारुणिक स्वरों में गीत भरी मनुहार देते देखा-सुना था।

गीत की मुख्य कड़ी थी- 'अनोखा कुंवर जी हो सायबा झालो देऊं घर आय अनोखा........ यह गीत आज भी विरहकंठी महिलाओं के स्वरों में जब मैं सुनता हूं तो उन महिलाओं की तरह सुबकियां लेने लगता हूँ जो पति-वियोग में बेहाल हुई होती हैं। गीत की पंक्तियों में कहा गया है - 'इस झाले के कारण मैंने अपने माता-पिता को सदैव के लिए छोड़ दिया। झाला देते समय जब मैं अपने देवर-जेठ को देखती हूँ तो लज्जित होती हूँ।'

इस समय वह अपने शरीर के उन सारे गहनों की भी फरमाईश करती है कि जब आयें तो खाली हाथ न आयें। मेरे लिए वो सारे गहने भी लेते आयें। नारी के तो गहने ही उसके हर अंग की शोभा हैं। एक दूसरे गीत में गणगौर पर प्रियतम के आह्वान पर अपने मन के उद्‌गार व्यक्त करती हुई कहती है- 'हे रसिया प्रियतम! आप गणगौर पर अवश्य पधारें। आपके लिए मैं बागों में डेरे डलवाऊंगी। आम के वृक्ष-वृक्ष पर घोड़े बंधवाऊंगी। डाली-डाली पर दीपक जुपाऊंगी। पत्ते-पत्ते पर घोड़ों के जीण उतारूंगी। आपके साथ अकथ और असीम आनंद और हरख लिए त्यौहार मनाऊंगी।'

विरह गीतों में गमकता अरदास :

राजस्थानी विरह लोक में ऐसे कई गीत नारी- लोककंठों पर सुनने को मिलते हैं जो विरह की उदात्त छटपटाहट लिए सर्वश्रेष्ठ माध्यम कहे गये हैं। एक छप्पर गीत लिया जा सकता है जिसमें कहा गया है- आपकी प्रतीक्षा करते-करते छप्पर पुराना पड़ गया है। बांस तिड़कने लग गये हैं। अब तो शीघ्र घर लौट आओ।

छप्पर पुरानो पिया पड़ गयो रे,
तिड़कण लागा बांस,
तिड़कन लागा बांस, ओ जी पिया बांस
अब घर आयजा गौरी रा बालमा हो जी....

यही नहीं, बर्दास्तगी की तब हद हो जाती है जब वह कह उठती है- 'कागज हो तो फिर भी बांचा जा सकता है पर कर्म बांचा नहीं जा सकता। कुंआ हो तो छलांगा जा सकता है पर समुद्र छालांगा नहीं जा सकता। टाबर हो तो रखा जा सकता है पर यौवन रखा नहीं जा सकता।'

ऐसे ही टकसाली दोहे मिलते हैं जिनमें विरह की ज्वाला की तीव्रता मिटने के बजाय और अधिक प्रज्वलित हुई मिलती है। विरह का ताप असहय संताप देता मिलता है। चाकरी जाते समय किये गये सब वादे बेमानी हो गये हैं। आने के दिन गिनते-गिनते अंगुलियों की रेखाएँ घिस गई हैं। हर घड़ी साजन-साजन की रट लगा रही हूँ। चुड़ले पर आपका लिखा नाम घड़ी-घड़ी बांच कर जीवन काट रही हूँ। आपने अपनी नौकरी को ही सब कुछ समझ रखा है जबकि अधिक सच तो यह है कि मात्र एक टके की नौकरी के पीछे आपने सवा लाख की कीमती नारी को विस्मृत कर रखा है- 'एक टका री पिया नौकरी रे, सवा लाखेणी घर री नार।'

जब जीने की कोई आस नहीं रह पाती है तब भी वह कौए को संबोधित करती कहती है- 'मृत्यु के बाद मेरा अंग-अंग नोचकर भले ही खाजाना किंतु प्रियमिलन की आश में मेरी दोनों आँखें अवश्य बचाये रखना।' मेरी समझ में राजस्थान की विरहिणी ही पति-वियोग में इतनी विह्वल, इतनी छटपटाहट और इतनी बेबस लिए जीवन को सर्वस्व झोंकने पर भी मिलन की उम्मीद आंखों में बचाये रखती है। ऐसा भावसाहित्य शायद ही कहीं अन्यत्र देखने को मिलेगा। उदाहरणार्थ ये पंक्तियां -

आप पधार्‌या चाकरी, कर गया कौल अनेक।
गिणतां-गिणतां घस गई, म्हारी आंगलियां री रेख।।
साजन साजन म्हैं करां, साजन जीव जड़ीय।
चुड़ला ऊपर मांडल्यूं, बांचूं घड़ी-घड़ीय।।
कागा सब तन खाइयो, चुन-चुन खाइयो मांस।
दो नैनां ना खाइयो, पिया मिलण री आस।।

-क्रमशः

शब्द रंजन
उदयपुर, गुरुवार 15 जुलाई 2021

सम्पादकीय

धरोहर का रखरखाव

विकास और विनाश दोनों का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध कहा गया है। गंभीरता से विचार करने पर यह बात सही लगती है। कारण कि सारे समय एक जैसे नहीं होते। सारी धरती भी एक जैसी नहीं होती। सारी प्रकृति भी एक जैसी नहीं होती। तो फिर एक जैसा कौन होता है, शायद कोई नहीं। न वनस्पति एक जैसी न सारे जीव एक जैसे। मनुष्य भी कहां एक जैसा। बड़ा विचित्र खेला है संसार का। और इसी का नाम संसार है। दूसरी योनियों की बात करें तो सारे देवी-देवता, पितर, दिव्यात्मा, दुष्टात्मा भी एक जैसी नहीं होती।

धरोहर से तात्पर्य उस सम्पदा विशेष से है जो थाती के रूप में हमारे बड़रों से मिली है। यह व्यक्तिगत और सार्वजनिक दो रूपों में होती है। यहां हमारी उस सार्वजनिक थाती से है जो कई अर्थों में स्थायी रूप से हमें प्राप्त हुई है जो इस मायने में अनोखी अभूतपूर्व है कि वह अन्यत्र वैसी उपलब्ध नहीं है और उसके पीछे छिपा इतिहास दर्शन है जिसे हमें संरक्षित किये रखनी है कारण कि वही हमारी पहचान भी है।

आजादी के बाद धरोहर और विरासत के नाम पर जो कुछ हमारे पास अमूल्य देन है, सरकार तो हर सम्भव उसे संरक्षित करने का प्रयत्न कर ही रही है पर हम जनों का कर्त्तव्य भी है कि हम भी उसमें अपनी पूरी-पूरी भागीदारी दें। व्यक्तिगत रूप में भी हमारे यहां ऐसी ऐसी धरोहर है जिसकी पूरे विश्व में ख्याति है। उनकी देखभाल तो और अच्छे ढंग से हो रही है। उदयपुर के राजमहल, बीकानेर में रामपरियों की हवेलियां, जैसलमेर की पटवों की हवेली इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। जिम्मेदार शासन इस धरोहर की लोकसम्मत परिव्याप्ति को देखते उचित संरक्षण ही नहीं करे, उसका सिलसिलेवार प्रामाणिक-पुख्ता वह अध्ययन भी समझदारों से तैयार करवाकर जनहिताय सुलभ करे।

जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य घोषित करना अनुचित नहीं

- डॉ. वेदप्रताप वैदिक -

कश्मीर के गुपकार-गठबंधन ने अपना जो संयुक्त बयान जारी किया है, उसमें मुझे कोई बुराई नहीं दिखती। प्रधानमंत्री के साथ 24 जून को हुई बैठक के बाद यह उसका पहला बयान है। इस बयान में कहा गया है कि 24 जून की बैठक 'निराशाजनक' रही लेकिन उनका अब यह कहना ज़रा विचित्र-सा लग रहा है, क्योंकि उस बैठक से निकलने के बाद सभी नेता उसकी तारीफ कर रहे थे।

उस बैठक की सबसे बड़ी खूबी यह रही कि उसमें जरा भी गर्मागर्मी नहीं हुई। दोनों पक्षों ने अपनी-अपनी बात बहुत ही संतुलित ढंग से रखी। उस समय ऐसा लग रहा था कि कश्मीर का मामला सही पटरी पर चल रहा है। बात तो अभी भी वही है लेकिन गुपकार का यह नया तेवर बड़ा मजेदार है। उसका यह तेवर सिद्ध कर रहा है कि 24 जून की बैठक पूरी तरह सफल रही। वह अब जो मांग कर रहा है, उसे तो सरकार पहले ही खुद स्वीकृति दे चुकी है। सरकार ने उस बैठक में साफ़-साफ़ कहा था कि वह जम्मू-कश्मीर का राज्य का दर्जा फिर से बरकरार करेगी।

अब गुपकार गठबंधन यही कह रहा है कि पूर्ण राज्य का यह दर्जा चुनाव के पहले घोषित किया जाना चाहिए। उसके संयुक्त बयान में कहीं भी एक शब्द भी धारा 370 और धारा 35 ए के बारे में नहीं कहा गया है। इसका मतलब क्या हुआ ? क्या यह नहीं कि जम्मू-कश्मीर की लगभग सभी प्रमुख पार्टियों ने मान लिया है कि अब जो कश्मीर वे देखेंगी, वह नया कश्मीर होगा। उन्हें पता चल गया है कि अब कश्मीर का हुलिया बदलनेवाला है।

भारत के कश्मीरियों को ही नहीं, पाकिस्तान के 'कश्मीरप्रेमियों' को भी पता चल गया है कि अब कश्मीर को पुरानी चाल पर चलाना असंभव है। कई इस्लामी देशों ने भी इसे भारत का आंतरिक मामला बता दिया है। ऐसी स्थिति में यदि कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा दे दिया जाए तो इसमें गलत क्या है?

कांग्रेस की मौन सहमति तो इस बदलाव के साथ 24 जून को ही प्रकट हो गई थी। भारत के कश्मीरियों को ही नहीं, पाकिस्तान के 'कश्मीरप्रेमियों' को भी पता चल गया है कि अब कश्मीर को पुरानी चाल पर चलाना असंभव है। कई इस्लामी देशों ने भी इसे भारत का आंतरिक मामला बता दिया है। ऐसी स्थिति में यदि कश्मीरी नेता यह मांग कर रहे हैं कि कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा चुनाव के पहले ही दे दिया जाए तो इसमें गलत क्या है ? मैं तो शुरु से ही कह रहा हूं कि कश्मीर को भारत के अन्य राज्यों के बराबर राज्य बनाया जाए। न तो वह उनसे ज्यादा हो और न ही कम ! हां कश्मीरियत कायम रहे, इसलिए यह जरुरी है कि अन्य सीमा प्रांतों की तरह वहाँ कुछ विशेष प्रावधान जरुर किए जाएँ। गुपकार-गठबंधन की यह मांग भी विचारणीय है कि जेल में बंद कई अन्य नेताओं को भी रिहा किया जाए। जो नेता अभी तक रिहा नहीं किए गए हैं, उन पर शक है कि वे रिहा होने पर हिंसा और अतिवाद फैलाने की कोशिश करेंगे। यह शक साधार हो सकता है लेकिन उनसे निपटने की पूरी क्षमता सरकार में पहले से है ही। इसीलिए जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य तुरंत घोषित करना अनुचित नहीं है।

टूटते, जुड़ते, मुड़ते, बनते, बिगड़ते हैं रिश्ते

- डॉ.कान्तिलाल यादव -

रिश्ते कच्चे धागे की तरह होते हैं
पता नहीं कब टूट जाते हैं।
रिश्ते मौसम की तरह होते हैं
पता नहीं कब बदल जाते हैं।
रिश्ते सच्चे हों तो जीवन को संवार देते हैं
रिश्ते कच्चे हों तो जीवन को मुरझा देते हैं
रिश्ते मतलब के हों तो गिरगिट की तरह रंग बदल देते हैं ।
रिश्ते हकीकत के हों, दर्द दूसरों का हो तो आंसु अपने निकाल देते हैं?
रिश्ते खून के हों तो दिल में पिघल जाते हैं।
रिश्ते दूर के ही सही सच्चे हों तो दिल से जुड़ जाते हैं
रिश्ते टूटते हैं, जुड़ते हैं, मुड़ते हैं, बनते हैं, बिगड़ते हैं,
रिश्ते कड़वे हैं,मीठे हैं, खट्टे हैं, चटपटे हैं, वफा के हैं, खफा के हैं।
रिश्ते कभी अपने भी पराए हो जाते हैं।
रिश्ते कभी पराए भी अपने हो जाते हैं।
रिश्तों में कड़वाहट घुल जाती है तब सबको खलती है।
रिश्तों में मिठास घुल जाए तो शहद की तरह लगती है।
रिश्तों को प्यार से यदी पनपाओ, कभी लगें ना पराए।
रिश्ते को बनाओ मीठा झरना, प्यार से हर कोई अपनाए।
रिश्तों को बनाओ दिल की धड़कन की तरह एक पल बिन खटक जाए।
रिश्तों की मिठास बिन मानव मनसे भटक जाए।
रिश्तों की माला टूटे तो प्यार का मोती बिखर जाता है।
रिश्तों की कड़ियां जुड़ जाए तो जीवन सोने-सा निखर जाता है।
रिश्तों की मनुहार बिना जीवन का होता नहीं शृंगार।
रिश्तों में विश्वास के बिना जीवन में बरसता है अंगार।
रिश्तों में जीने का एहसास है तभी जीने का विश्वास है।
रिश्तों में जीवन के बनते सुंदर मोती
तभी मानव में खिलती फूलों की खुशबू की खेती।

दो तुक्तक

(1) लोकतंत्र में जूतों की माला भी स्वागत करती
उल्टा जूता रख माथे पर, मटकी पानी भरती
आधी मूंछ उड़ाते हैं
भांड भड़ैती गाते हैं
इतनी तेरी नजर बुरी, गायें चारा नहीं चरती।

(2) सात बान्दरे खेल रहे थे, खेल चांदनी में सटकर
इतने में एक डाकी आया, बोला सबसे ही कटकर
मास्क लगाओ
दूरी लाओ
जंगल में ही रहो भटकते, खाओ कंद मूल डटकर।

सोने की चिड़िया वाले देश में स्वर्ण-ऋण की बढ़त

- प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत -

भारत में सोना हमेशा से ही समृद्धि का प्रतीक रहा है। ऐसा समय भी था जब यह देश सोने की चिड़िया कहलाता था। तब स्वर्ण और खुशहाली की समृद्धि थी पर आज इसे आर्थिक मुसीबत के समय श्रेष्ठ विकल्प के रूप में देखा जाता है। जब संकट आता है तब सोना गिरवी रखकर ऋण लिया जाता है। यह ऋण गांव के साहूकार, मित्र और आजकल तो बैंक भी आसानी से दे देते हैं। भारत में यह परंपरा सदियों से चली आ रही है।

कोविड-19 महामारी की वजह से भारतीय अर्थव्यवस्था में मांग में जबर्दस्त कमी आयी है। इसकी वजह से बाजार में नकद प्रवाह रुक गया। ग्रामीण क्षेत्रों में तनाव बढ़ गया। छोटे व्यापारी प्रेशर में आ गए। औद्योगिक इकाइयों द्वारा कर्मचारियों को या तो नौकरी से निकाल दिया गया या उनकी सैलरी कम करदी। परिणामस्वरूप लोगों ने अपनी जमा पूंजी को खर्च करना प्रारम्भ कर दिया। इससे घरेलू बचत में जबर्दस्त कमी आयी और दूसरा, पारिवारिक कर्ज बढ़ गया।

2020-21 के प्रथम तिमाही में घरेलू वित्तीय बचत जीडीपी का 21प्रतिशत थी, वह गिर कर तीसरी तिमाही में 8 प्रतिशत रह गयी। यह अकल्पनीय गिरावट कई आर्थिक संकेत देती है। जब 2008 में पूरे विश्व में आर्थिक मंदी आयी थी तब हम सुरक्षित सिर्फ इसलिए रहे क्योकि हमारी घरेलू बचत सर्वाधिक (35 प्रतिशत) थी। यों दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये ऋण लेना अच्छा नहीं माना जाता किंतु यह भी सच है कि देश में स्वर्ण ऋण की मात्रा में निरंतर वृद्धि हो रही है। लोगों के पास मेडिकल, शिक्षा और शादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए सोने को गिरवी रखकर ऋण लेने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा है।

यही कारण है कि 2020-21 में वाणिज्यिक बैंकों द्वारा दिए गए स्वर्ण ऋण में 81.6 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई। वाणिज्यिक बैंकों के आंकड़ों के अनुसार यह बढ़ोतरी ढाई गुणा हो गई। इसके अलावा यदि साहूकारों, गैर-बैंकिंग फाइनेंस कंपनियों द्वारा दिए गए ऋण को सम्मिलित कर लिया जाये तो यह आंकड़ा आसमान छूता मिलेगा। सामान्यतया सोने के मूल्य का 75 प्रतिशत ऋण दिया जाता है किंतु महामारी को देखते हुए अगस्त, 2020 में आरबीआई ने ऋण की सीमा 75 प्रतिशत से बढ़ाकर 90 प्रतिशत कर दी।

यह अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा संकेत नहीं है। ऐसी स्थिति में ऋण की किस्त चुकाना दूभर हो जाता है। जब ऋण समय पर नहीं चुकाया जाता है तो बैंक गिरवी रखे सोने को नीलाम कर अपना ऋण तो वसूल कर लेते हैं किन्तु ऋणी अपनी गाढ़ी कमाई से खरीदा गया सोना सदा के लिए खो देता है ।

इस महामारी के दौरान आय की कमी के कारण लगभग 7.2 करोड़ लोग मध्यमवर्ग से गरीबी की रेखा के नीचे चले गए हैं। सरकार ने पिछले 2 वर्षों से आकड़ों को प्रकाशित करना ही बंद कर दिया है। मेरे कुछ सुझाव इस प्रकार हैं-

(1) महामारी से प्रभावित परिवारों को नकद मुआवजा दिया जाए। (2) पीड़ितों के अलावा गरीब परिवारों को भी राशन के बजाय नकद राशि दी जाय। (3) शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सार्वजनिक सुविधाओं पर पूंजीगत खर्च बढ़ाया जाय। इसका निजीकरण नहीं किया जाय। (4) सरकार को अपने स्लोगन 'इज ऑफ डूइंग बिजनेस' के स्थान पर 'इज ऑफ लिविंग' पर विशेष ध्यान देना चाहिए। (5) औद्योगिक श्रम कानूनों के उन प्रावधानों को रोका जाना चाहिए जहां श्रमिकों को ज्यादा घंटा काम करने के एवज में कम मजदूरी दी जाती है। (6) मनरेगा कार्यक्रम को शहरों में भी लागू किया जाय।

इन उपायों से जनता के पास नगद पैसा आयेगा। अर्थव्यवस्था में मांग सृजित होगी। उत्पादन बढ़ेगा। रोजगार उत्पन्न होगा। इससे अर्थव्यवस्था पुनः सुदृढ़ होगी जिससे आर्थिक संकट दूर होने में मदद मिलेगी।

मेरी प्रदर्शनधर्मी यात्रा (9)

-देवीलाल सामर

देश में प्रथमबार ऐसा समारोह हुआ और प्रथमबार पुतलियों को एक अखिल भारतीय रंगमंच उपलब्ध हुआ। हम अनायास ही देश में पुतलियों के नेता बन गये। भारतीय पुतलियां उस समय विश्व की पुतलियों के सामने नगण्य सी थी जबकि एक समय वे समस्त विश्व की सिरमौर थीं।

मेरी तड़प यह थी कि ये कलाकार युग परिवर्तन के साथ आजीविका एवं अपने कद्रदानों की दृष्टि से बड़े संकट में पड़े हुए हैं। हेण्डीक्राफ्ट बोर्ड के माध्यम से लोकदस्तकारों को बड़ा प्रोत्साहन मिला। सैकड़ों-हजारों रूपयों की इनकी बनाई चीजें इनसे खरीदने लगा। बसी छोटा सा गांव हिन्दुस्तान के नक्शे पर आ गया और अनेक कलाकारों का तीर्थस्थल बन गया।

यह तो मेरे लिए सम्भव नहीं था कि मैं अपने व्यस्त जीवन में से कुछ क्षण निकाल कर पुतली के अध्ययन के लिए सारे देश का दौरा करूं। वह समय कला मण्डल का संक्रान्तिकाल था। हम भारी आर्थिक कष्ट में चल रहे थे। अत: विचार किया कि एक अखिल भारतीय कठपुतली समारोह उदयपुर में आयोजित किया जाय जिससे देश की समस्त विधा एक जगह एकत्रित होगी और उनके अध्ययन आदि का भी अच्छा अवसर मिलेगा। सर्वत्र पत्रव्यवहार किया गया और बात ही बात में देश के कुल 12 पुतली दलों की स्वीकृतियां आ गई।

हमने राजस्थान सरकार को भी इस महान कार्य के लिए आकर्षित किया और उससे भी कुछ आर्थिक सहायता इसके लिए उपलब्ध हो गई। और भी कई सूत्रों से समारोह के लिए आवश्यक धन उपलब्ध कर लिया। समारोह बड़ी धूमधाम से हुआ और अनेक ऐसे दल भी आ गये कि उनकी जितनी तारीफ करें उतनी कम हैं।

वे सभी पारम्परिक पुतली दल थे और देश की प्राय: सभी शैलियों का उनमें प्रतिनिधित्व था। इससे पारस्परिक भाईचारा तो बढ़ा ही साथ ही हमारी परम्परा में कठपुतलियों का बड़ा महत्वपूर्ण प्रवेश हुआ। उस समय भारतीय लोककला मण्डल का पुतलियों की दुनिया में लगभग कोई योगदान नहीं था बल्कि हमने जो कठपुतली रामलीला बनाई थी वह भी इतनी खराब थी कि उसका प्रदर्शन भी हमने देना उचित नहीं समझा।

देश में प्रथमबार ऐसा समारोह हुआ और प्रथमबार पुतलियों को एक अखिल भारतीय रंगमंच उपलब्ध हुआ। हम अनायास ही देश में पुतलियों के नेता बन गये। भारतीय पुतलियां उस समय विश्व की पुतलियों के सामने नगण्य सी थी जबकि एक समय वे समस्त विश्व की सिरमौर थीं।

उस समारोह में आंध्र की छाया पुतलियों का एक अति प्राचीन दल भी आया। कुमकुनम बम्बोलोटम दल ने भी इस समारोह की शोभा बढ़ाई। उस समय दिल्ली आकाशवाणी का भी अपना एक दल था। उसमें राजस्थान के पारम्परिक पुतली वाले सागर भाट का समस्त परिवार काम करता था। तत्कालीन आकाशवाणी के महानिदेशक एवं सुप्रसिद्ध नाट्यविज्ञ श्रीयुत् जगदीशचन्द्र माथुर द्वारा रचित एवं निर्देशित कुंवर सिंह की टेक नामक पुतली नाटक भी उस समारोह में प्रस्तुत किया गया। दिल्ली का पुतलीघर भी अमरसिंह राठौड़ नामक परिमार्जित पुतली नाटिका लेकर उदयपुर आया था। बंगाल के रघुनाथदास भी अपने आधुनिक पुतलीदल के साथ इस समारोह में आये थे।

अन्य छोटे-मोटे दल तो इतने थे कि उनका उल्लेख क्या करूं। कुछ लोग तो केवल यह समारोह देखने आये थे और बड़े-बड़े आयोजन देखकर अपनी पुतलीकला दिखाने में सकुचा गये थे। कुल मिलाकर इस समारोह में 98 दलों ने भाग लिया और तीन दिन तक यह समारोह बड़ी धूमधाम के साथ चलता रहा।

प्रथम बार उदयपुर के नागरिकों ने पुतलीकला का यह वैविध्यपूर्ण चमत्कार देखा। यद्यपि भारतीय लोककला मण्डल ने अपना कोई पुतली प्रदर्शन प्रस्तुत नहीं किया परन्तु उसका नेतृत्व समस्त देश में स्थापित हो गया। सर्वत्र पत्र-पत्रिकाओं में उसका प्रचार भी बहुत हुआ।

इस वक्त तक कलामण्डल का अपना कोई निजी भवन नहीं था। जमीन खरीदी जा चुकी थी और उसी जमीन पर हमने यह प्रथम कठपुतली समारोह भी आयोजित किया था। कठपुतलियों में जबसे हमारी रूचि बढ़ी तभी से राजस्थान की क्राफ्टकला की ओर भी हमारा ध्यान गया। यद्यपि दस्तकारियां तो हमारे देश में अनेक हैं पर उन सबमें हमारी रूचि होना लाजमी नहीं था।

मैं मूलत: प्रदर्शनकारी एवं सांस्कृतिक कलाओं का व्यक्ति रहा हूं। जो दस्तकारियां, वस्त्राभूषण एवं कलात्मक उपकरण सीधे नृत्य-गीत-नाट्य एवं सांस्कृतिक प्रसंगों से जुड़े हों तो वे मेरा सर्वप्रथम ध्यान आकर्षित करते। जब से मैंने कुचामण क्षेत्र में प्रथमबार पुतलियां देखीं, मेरा ध्यान उन काष्ठ निर्मित सांस्कृतिक उपकरणों की तरफ गया जिनका सम्बन्ध जीवन के साथ लगे हुए किसी न किसी सांस्कृतिक प्रसंग से जुड़ा हो।

यही कारण है कि मैं जब चित्तौड़ के पास के बसी गांव में गया तो वहां के काष्ठ निर्मित चोपड़े, गणगौरें, खांडे, पुतलियां, मुखौटे वेवाण एवं कावड़ें मेरा ध्यान आकर्षित किये बिना नहीं रह सकीं। जब मैं झुंझनु, सीकर, रामगढ़ आदि शेखावाटी के क्षेत्रों में गया तो वहां के पोमचे, मोठड़े, पीलिये, फागुणिये जो राजस्थानी महिलाओं द्वारा जीवन के विविध सांस्कृतिक प्रसंगों पर प्रयुक्त होते हैं, मेरे हृदय में घर कर गये।

जब मैं शाहपुरा, भीलवाड़ा, चित्तौड़, रायपुर आदि गांवों में गया तो वहां की पड़ों ने मुझे मोहित कर लिया। ये पड़ें पाबूजी, देवजी, माताजी, रामदेवजी आदि लोकदेवताओं की जीवन-गाथाओं को चित्रित करती थीं। मैं उनकी विशिष्ट चित्रशैली से तो प्रभावित हुआ ही पर उनके साथ जो पर्व-उत्सव-त्यौहार के गीत जुड़े हुए हैं, उनका महत्व मुझे इन पड़ों के चित्रों से भी अधिक महत्वपूर्ण लगा। जब मैं करौली क्षेत्र में गया तो वहां विशिष्ट गणगौरें मुझे आकर्षित किये बिना नहीं रह सकीं। मैं जब नाथद्वारा के पास के मोलेला गांव में पहुंचा तो वहां के कुम्हारों ने मुझे मोहित कर दिया। कई दिनों तक मैं उनके घरों में रह गया और उनके द्वारा निर्मित मोलेला मूर्तियों का मर्म खोजने लगा।

मेरी इन दिलचस्पियों ने बरसों तक मुझे गांव-गांव भटकाया और अन्ततोगत्वा मुझे ऐसा लगा कि यह कला का असीम मण्डन में अपने मस्तिष्क में कहां तक ढोये रहूंगा। मैंने भारत के हेण्डीक्राफ्ट बोर्ड को इस ओर आकर्षित किया। चिट्ठियों पर चिट्ठियां लिखता गया। मेरी तड़प यह थी कि ये कलाकार युग परिवर्तन के साथ आजीविका एवं अपने कद्रदानों की दृष्टि से बड़े संकट में पड़े हुए हैं परन्तु शुरू में बोर्ड ने भी मेरी सुनवाई नहीं की।

एकबार मैं स्वयं दिल्ली पहुंच गया और बोर्ड की अध्यक्षा श्रीमती कमलादेवी चटोपाध्याय से मिला। पहली ही मुलाकात में उन्हें पता लग गया कि मेरे द्वारा उन्हें बहुत बड़ा खजाना हाथ लगेगा। वे मेरी विनती पर एबबार उदयपुर आईं। उस समय हमारी अपनी इमारत नहीं थी। न हमारा कोई सजा हुआ संग्रहालय परन्तु मेरे संग्रह को देखकर वे बहुत ही प्रसन्न हुईं। फिर तो धीरे-धीरे मैं तीन-चार वर्षों तक उन्हें राजस्थान के विशिष्ट सांस्कृतिक क्षेत्रों में घुमाता रहा। और एक दिन वह आ गया जब कि हेण्डीक्राफ्ट बोर्ड के माध्यम से इन लोकदस्तकारों को बड़ा प्रोत्साहन मिला। सैकड़ों-हजारों रूपयों की इनकी बनाई चीजें बोर्ड इनसे खरीदने लगा।

बसी गांव की काष्ठ कला श्रीमती कमलादेवी को सर्वाधिक अपनी ओर खींचने लगी। यह छोटा सा गांव जिसका कोई महत्व नहीं था। कोई पूछता या जानता भी नहीं था,

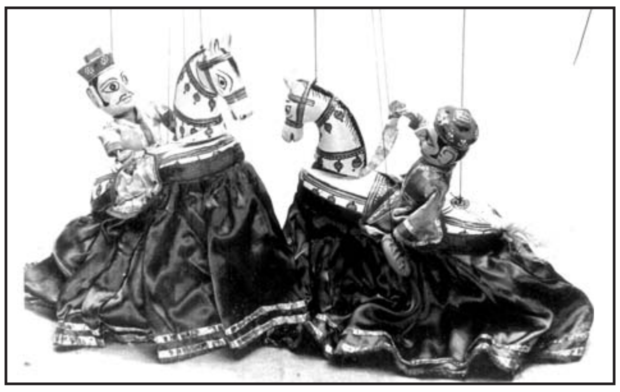

हिन्दुस्तान के नक्शे पर आ गया और अनेक कलाकारों का तीर्थस्थल बन गया। इसी गांव से राजस्थान की पारम्परिक पुतलियों का भी निर्माण होता है। जबसे मेरी रूचि कठपुतलियों में बढ़ने लगी और उस कुचामण वाले पुतलीकार की पुतलियों का मिलान मैंने बसी गांव में बनी पुतलियों से किया तो ज्ञात हुआ कि वे सभी पुतलियां इसी गांव की बनी हुई हैं तो मैं इस बसी गांव पर फिदा हो गया और वहां के प्राय: सभी खैरादियों का मैं विश्वस्त एवं हितचिन्तक बन गया।

उन्हीं की प्रेरणा से मैंने कलामण्डल में पुतली निर्माण विभाग की स्थापना की और बसी गांव के कुछ विशिष्ट खैरादियों को मैं अपने साथ ले आया। आज बीस-बीस बरस से ये कलाकार मेरे पास काम करते हैं और मेरे पुतली-कक्ष के वे सबसे बड़े भागीदार बने हैं। हजारों की तादाद में इनके द्वारा पुतलियां बन चुकी हैं।

सन् 1958 में हमारा यह विभाग व्यवस्थित रूप से चलने लगा और जबसे कठपुतली कार्य संस्था में शुरू हुआ यह विभाग सर्वाधिक महत्व प्राप्त कर गया। प्रथम अखिल भारतीय कठपुतली समारोह भी हमने इसी विभाग के बल पर किया। सम्मेलन के समय जो पुतली प्रदर्शनी लगाई गई थी उसमें इस विभाग का जबरदस्त योगदान था।

श्रीमती कमलादेवीजी हमारे इस काम से सर्वाधिक प्रभावित हुई। मैं उनका अत्यन्त मनचाहा व्यक्ति बन गया। मुझे वे अपने पुत्र के समान समझती थी और सदा ही हमारी सहायता के लिए तैयार रहती थी। वे यह कहती भी रहती थी कि राजस्थानी कला-परम्परा की ओर मेरी आंखें खोलने वाले यदि कोई व्यक्ति हैं तो देवीलाल सामर ही है।

उनके मन में बस तो गया ही था। वे बराबर इस टोह में थीं कि वे किस तरह मुझे आगे बढ़ावें और कलासेवकों में मेरा दर्जा ऊपर उठे। वह वर्ष था 1960 का। श्रीयुत हुमायु कबीर देश के संस्कृति मंत्री थे। उनकी भी मुझ पर असीम कृपा थी। मैं जब विद्याभवन में शिक्षक था तो उन्होंने मेरे सामूहिक लोकनृत्यों के बच्चों पर किये हुए प्रयोग देख थे।

श्रीमती कमलादेवीजी चाहती थी कि मैं विदेशों में जाकर कठपुतलियों के प्रयोग देखूं। कठपुतलियों का निर्माण तो हेण्डीक्राफ्ट बोर्ड की परव्यू में आता था परन्तु उसका नाट्यांश उनके विषय के अन्तर्गत नहीं था। श्रीमती कमलादेवीजी भारतीय नाट्य संघ की उस समय अध्यक्षा ही नहीं उसकी प्राण भी थीं। हमारी संस्था भी श्रीमती चट्टोपाध्याय की प्रेरणा से ही नाट्य संघ की सदस्य बन चुकी थी। मैंने नाट्य संघ के लिए समस्त राजस्थान के लोकनाट्यों का सर्वेक्षण भी किया था और उसकी रिपोर्ट तथा उसके लिए संग्रहित की हुई नाट्य सामग्री भी नाट्य संघ को प्रदान की थी।

- क्रमश:

बाजार / समाचार

विद्यापीठ विवि में लोकसंतों की शोध पर विशेष कोष

उदयपुर (वि.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय की वित्त एवं रिसर्च बोर्ड की बैठक में कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने राजस्थान की कला-संस्कृति एवं सभ्यता से आमजन को रू-ब-रू कराने के लिए लोकसंतो व देवी-देवताओं पर शोध के लिए विशेष कोष की स्थापना करने को लेकर कहा कि इसके अन्तर्गत प्रत्येक अकादमिक कार्यकर्ता को शोधकार्य के लिए 10 हजार रूपये की राशि दी जायेगी। अत: प्रत्येक अकादमिक सदस्य अपने कार्य का कॉपीराईट कराये। उन्होंने कहा कि परीक्षा विभाग के कार्यों को सुगम करने के उद्देश्य से परीक्षा सम्बन्धी सभी कार्य ऑनलाईन किये जायेंगे। कोरोना संकट के दौरान दिवंगत हुए विद्यापीठ के कार्यकर्ताओं के परिजनों को तीन लाख रूपये की सहायता राशि प्रदान की जायेगी।

बैठक में गोरखपुर विवि के कुलपति प्रो. राजेशसिंह ने देश-विदेश के विश्वविद्यालयों के साथ एक्सजेंच प्रोग्राम बना एक-दूसरे प्रान्त की कला-संस्कृति को जानने का सुझाव दिया। पूर्व कुलपति प्रो. कैलाश सोडाणी ने पीएचडी शोधार्थी का एक घंटे का वाईवा लेने की मंशा प्रकट की।

ग्रामीण क्षेत्रों में पढ़ रही छात्राओं को उच्चशिक्षा से जोड़ने प्रतापनगर में इसी सत्र से कन्या महाविद्यालय प्रारंभ कर दिया जाएगा। इसमें स्नातक स्तर पर कला, वाणिज्य व विज्ञान संकाय होंगे। उन्होंने बताया कि विद्यार्थियों को राजस्थानी भाषा की विभिन्न बोलियों यथा मारवाड़ी, मेवाड़ी, शेखावटी, ढूंढाडी, हाड़ौती, वागड़ी आदि के लिखित दस्तावेजों को पढ़ने व लिखने का साहित्य संस्थान द्वारा अवसर मिलेगा। ब्राह्मी, खरोस्टी, शारदा, कुटील लिपि का भी शिक्षण दिया जायेगा। ऐसे ही आयुर्वेद महाविद्यालय प्रारम्भ किया जायगा ताकि प्राचीन चिकित्सा पद्धति के पुनर्ज्ञान और प्रभाव की वैज्ञानिक पद्धति विकसित की जा सके। इसी क्रम में डबोक में 100 बेड का हॉस्पिटल अनेक सुविधाओं से युक्त लगभग तैयार है।

जेके टायर और हुंडई में गठबंधन

उदयपुर(वि.)। हुंडई क्रेटा की सफल साझेदारी के बाद जेके टायर एण्ड इंडस्ट्रीज लि. ने हुंडई मोटर इंडिया की नवीनतम एसयूवी हुंडई अल्काज़र के लिये हाथ मिलाया है। भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल उच्च प्रदर्शन वाले टायर्स की तकनीकी विशेषज्ञता से प्रेरित जेके टायर ने एक बार फिर से अपने यूएक्स रॉयल हाई परफारमेन्स टायर के साथ हुंडई अल्काज़र के लिये श्रेष्ठ तकनीकी बेहतरीन प्रदर्शन एवं सुगमता की पेशकश की है।

अपने 5-रिब एसिमेट्रिक डिजाइन, वेरिएबल ड्राफ्ट ग्रूव टेक्नोलॉजी, स्टेबल शोल्डर ट्रेड ब्लॉक्स,वाफेल ग्रूव एवं एरो विंग डिजाइन के साथ जेके टायर के यूएक्स रॉयल हाई परफॉरमेंस टायर हुंडई अल्काजर के लिये श्रेष्ठ है। उद्योग में अग्रणी होने के नाते जेके टायर उच्च तकनीकी युक्त उत्पादों की अटूट प्रतिबद्धता के लिये विख्यात है जो कि बेहतर गुणवत्ता के कारण भारतीय सड़को के लिये सबसे उपयुक्त है। द यूएक्स रॉयल हाई परफॉरमेंस टायर क्रिस्प हैंडलिंग एवं कम शोर साथ बेहतर आरामदायक सवारी की सुविधा प्रदान करने में सक्षम है।

दिलीप कुमार को श्रद्धांजलि

उदयपुर (वि.)। सहाराश्री सुब्रतराय सहारा ने दिलीप कुमार को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि महान कलाकार दिलीप कुमार के निधन से भारतीय सिनेमा के इतिहास का एक स्वर्ण युग समाप्त हो गया है। अपनी अभिनय कला के बल पर वे अत्यधिक लोकप्रिय अभिनेता के रूप में स्थापित हुए। आज जब मैं महानायक दिलीप कुमार के निधन पर शोकाकुल हूं तो मेरे मन में उनके साथ अपने सान्निध्य के अनेकानेक संस्मरण स्मृत हो रहे हैं। यह दिलीप कुमार की महानता ही थी कि दो-तीन बार फोन पर बात होने के साथ ही मुझे उनकी आत्मीयता प्राप्त हो गयी थी। वे जब भी लखनऊ आते थे तो मेरे आवास पर ही ठहरते थे। एक बार तो वह लगातार चार दिन तक ठहरे थे। वे दिन स्वर्णिम यादों के साथ मेरे मन में स्थायी भाव से मौजूद है। वे बहुत बड़े कलाकार थे। अपने अविस्मरणीय अभिनय के कारण वे फिल्म जगत और दर्शकों के मन में सदैव जीवित रहेंगे।

'टाईड बनाए टाइम' की घोषणा

उदयपुर (वि.)। टाइड ने नई फिल्म लॉन्च कर अपने नए अभियान 'टाईड बनाए टाइम' की घोषणा की। पीएंडजी इंडिया के चीफ मार्केटिंग ऑफिसर शरत वर्मा ने कहा कि नई फिल्म एक दादी की कहानी है, जो अपने घर आई है। घर में वह देखती है कि उसकी पोती अकेली रहती है और माता-पिता का समय पाने कोशिश करती है क्योंकि माता-पिता ऑफिस या घर के कामों में व्यस्त रहते हैं। दादी परिवार को यह एहसास कराती है कि पोती उनकी कितनी कमी महसूस करती है और उनका समय पाना चाहती है।

फिल्म को 3 मिलियन से ज्यादा व्यू मिल चुके हैं और दादी मां का संवाद - 'हमारे पास समय होता नहीं, हमें समय बनाना पड़ता है' कई लोगों की कहानी है। टाइड सरल तरीकों से यह दिखा रहा है कि परिवार किस प्रकार एक दूसरे के लिए समय निकाल सकते हैं। उदाहरण के लिए, भारतीय 300 घंटे का समय लॉन्ड्री में बिताते हैं। डबल पॉवर, टाइड सोक करने पर या फिर मशीन के अंदर की बेहतर क्लीनिंग प्रदान कर सकता है। इससे लॉन्ड्री में कम समय लगता है और इस बचे हुए समय में परिवार, दोस्तों, रुचियों, शौक में यह समय बिताया सकता है।

वेल्थक्रिएशन कैम्पेन की शुरूआत

उदयपुर (वि.)। एचडीएफसी एसेट मैनेजमेंट कंपनी लि. द्वारा एचडीएफसी फ्लेक्सी कैप फंड की यात्रा के 26 वर्ष पूरे होने पर वेल्थक्रिएशन कैम्पेन की घोषणा की। एचडीएफसी फ्लेक्सी कैप फंड, (भूतपूर्व, एचडीएफसी इक्विटी फंड) भारत के सबसे पुराने म्युचुअल फंड योजनाओं में से एक है जो बाजार चक्र में सत्यापित ट्रैक रिकॉर्ड के साथ ढाई दशकों से निवेशकों को सेवा प्रदान कर रहा है। एचडीएफसी एसेट मैनेजमेंट कंपनी लि. के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर प्रशांत जैन ने कहा कि एचडीएफसी फ्लेक्सी कैप ने पूर्व में मार्केट मेल्टडाउन और मार्केट एक्सेस का सफलता पूर्वक नेविगेट किया जैसे-2000 में इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, 2007 में पावर, इंफ्रास्ट्रक्चर और रियल एस्टेट, 2015 के बाद फार्मास्यूटिकल्स, 2018 के बाद मिडकैप्स इत्यादि। इन सभी मौकों पर फंड ने इसके निवेश में अनुशासित दृष्टिकोण सहित व्यापार की स्थिरता और मूल्यांकन के बल पर कठिन बाजार परिस्थितियों का सफलतापूर्वक आकलन किया।

अजय खतूरिया द्वारा 61वीं बार रक्तदान

उदयपुर (वि.)। व्यापार के साथ समाजसेवा में सहयोग करने वाले अजय मार्बल के युवा व्यवसायी अजय खतूरिया ने 61वीं बार रक्तदान किया है। रक्तदान करने की प्रेरणा उन्हें उनके पिताश्री जवाहरलालजी खतूरिया से मिली।

अजय खतूरिया ने बताया कि वर्ष 2000 में पिताश्री व्यवसाय के सिलसिले में कुवैत गए थे। वहां पिताश्री एक सड़क दुर्घटना में घायल हो गये। पिताश्री को खून की जरूरत पड़ी लेकिन कोई केयरटेकर साथ नहीं होने पर उनका निधन हो गया था। उनके पार्थिव शरीर को उदयपुर लाने में भी काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। जिस परेशानी के दौर से वे गुजरे उस परिस्थिति ने उन्हें सोचने पर मजबूर कर दिया कि इतने अच्छे व्यवसायी को भी इतनी तकलीफ देखनी पड़ती है तो आम जनता का क्या होता होगा। उस दिन से उन्होंने निश्चय किया कि वे हर तीन माह में एक बार रक्तदान अवश्य करेंगे। तब से

वे नियमित रक्तदान करते आ रहे हैं। खतूरिया ने कहा कि जब तक शरीर चल रहा है रक्तदान करता रहूंगा। उन्होंने लोगों से निवेदन किया कि वे ज्यादा से ज्यादा रक्तदान करें। रक्तदान से किसी प्रकार की कोई बीमारी नहीं होती और न कोई कमजोरी आती है।

जेरार्ड नुस ने की नवोदित फुटबॉलरों से बातचीत

उदयपुर (वि.)। लिवरपूल के पूर्व कोच जेरार्ड नुस, जिन्होंने पहले स्टीवन गेरार्ड, जाबी अलोंसो, फर्नांडो टोरेस जैसे फुटबॉल के दिग्गजों के साथ काम किया है, ने वर्चुअल प्लेटफॉर्म पर जिंक फुटबॉल अकादमी के नवोदित फुटबॉलरों से बातचीत की।

प्रतिष्ठित स्पेनिश कोच ने इंडियन सुपर लीग क्लब नॉर्थईस्ट यूनाइटेड एफसी में मुख्य कोच के रूप में अपने दिनों की कहानियों से युवा फुटबॉलरों को प्रेरित किया। उन्होंने सपनों को पूरा करने के लिए जुनून और भूख के महत्व पर प्रकाश डाला और उन्हें इंडियन सुपर लीग के इतिहास में सबसे कम उम्र के कप्तान 20 वर्षीय लालेंगमाविया का उदाहरण देकर अपनेआप को उसी तर्ज पर विकसित करने के लिए प्रेरित किया।

जेरार्ड ने कहा कि जब मैंने लालेंगमाविया को नार्थईस्ट युनाइटेड एफसी टीम का कप्तान बनाया तो सभी को आश्चर्य हुआ क्योंकि हमारे डगआउट में पहले से ही कई अनुभवी भारतीय और विदेशी खिलाड़ी थे लेकिन मुख्य कोच के रूप में, मैं उस समर्पण और कड़ी मेहनत से बेहद खुश था जो मिजोरम का यह खिलाड़ी पिच पर और पिच के बाहर दोनों जगह लगा रहा था। ये एक महत्वाकांक्षी प्रतिभा के गुण हैं। इसके तुरंत बाद, उन्हें भारतीय राष्ट्रीय टीम के लिए भी बुलाया गया। जेरार्ड ने नार्थईस्ट युनाइटेड एफसी के राइट-बैक आशुतोष मेहता के बारे में बात की, जो 29 साल की उम्र में भी हमेशा अपनी कमजोरियों को मजबूत करने और खुद को बेहतर बनने की तलाश में लगे रहते हैं।

नसों में जमे खून के थक्के का सफल उपचार

उदयपुर (वि.)। पारस जेके अस्पताल में चिकित्सकों ने आधुनिक तकनीक से बीना चीर-फाड़ के मस्तिष्क की वेन्स में जमे खून के थक्के को निकालकर मरीज का सफल उपचार किया है।

इंटरवेंशनल न्यूरोलोजिस्ट डॉ. तरूण माथुर ने बताया कि उदयपुर निवासी 55 वर्षीय महिला को सिर में दर्द, मिर्गी के दौरे और बेहोशी की समस्या के चलते पारस जेके अस्पताल लाया गया। महिला की केस हिस्ट्री जानने के बाद उनकी एमआरआई करवाई जिसमें मस्तिष्क की मुख्य सेरेब्रल वेन्स साइनस में खून का थक्का जमा होने का पता चला। दवाइयों से फायदा न होने पर मैकेनिकल थ्रोम्बेक्टोमी एंड कैथेटर गाइडेड इंस्टा थ्रोम्बोलिसिस तकनीक से उपचार किया जिसमें मरीज के पैर की नस से एक सुक्ष्म तार एवं कैथेटर को मस्तिष्क की वेन्स तक पहुंचाकर स्टेन्ट रिट्राइव करके थक्के को निकाला गया और कैथेटर से मस्तिष्क में खून के थक्के को गलाने की दवा इंजेक्ट की गई। उपचार के 24 घंटे के बाद ही मरीज की स्थिति में सुधार देखने को मिला। महिला अब पूरी तरह से स्वस्थ है।

कागज की थैलियां बांट किया लोगों को जागरूक

उदयपुर (वि.)। रोटरी क्लब उदयपुर मीरा द्वारा 'नो यूज

पॉलीथिन' के तहत पंचवटी में कागज के बैग का विमोचन किया गया।

अध्यक्ष सुषमा कुमावत, सचिव अर्चना व्यास, पूर्व अध्यक्ष विजयलक्ष्मी गलूंडिया तथा मधु सरीन ने देहलीगेट सब्जीमंडी में थेलेवालों और सब्जी विक्रताओं को प्लास्टिक की पॉलिथिन के स्थान पर कपड़े और कागज के बैग में फल, सब्जी देने के लिए प्रोत्साहित किया। इस दौरान 2000 कागज के बैग वितरित किये गए। सुषमा कुमावत ने कहा कि पॉलिथिन के उपयोग से आज हमारा पर्यावरण खत्म हो रहा है। हमें पॉलिथिन के उपयोग से बचना चाहिए। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि वे जब भी घर से सब्जी या अन्य सामान खरीदने निकले, साथ में कपड़े का थैला अवश्य रखें।

'एक्सिस फ्लोटर फंड' लॉन्च

उदयपुर (वि.)। एक्सिस म्यूचुअल फंड, जो भारत के सबसे तेजी से बढ़ रहे फंड हाउसेज में से एक है, ने अपना नया फंड ऑफर 'एक्सिस फ्लोटर फंड' लॉन्च किया। यह फंड उन अल्पावधि निवेशकों के लिए उपयुक्त समाधान उपलब्ध कराता है जो संभावित रूप से बढ़ता हुआ ब्याज दर वातावरण चाहते हैं और साथ ही अपने निवेश के लिए उपयुक्त पार्किंग समाधान चाहते हैं। इस फंड का प्रबंधन आदित्य पगरिया, फंड मैनेजर-फिक्स्ड इनकम द्वारा सक्रियतापूर्वक किया जायेगा।

एक्सिस एएमसी के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी चंद्रेश निगम ने कहा कि 'एक्सिस फ्लोटर फंड' हाईक्वालिटी इंस्ट्रूमेंट्स और एए इश्यूअर्स का डाइनैमिक मिश्रण है। यह 6-18 महीने के पोर्टफोलियो एवरेज मैच्योरिटी को लक्ष्य करता है। यह उन निवेशकों के लिए उपयुक्त है जो अल्पावधि के लिए अधिशेष फंड्स का निवेश करना चाहते हैं या जो अपने डेट पोर्टफोलियो में ब्याज दर जोखिमों को सीमित करना चाहते हैं। सुपीरियर रिस्क रिवार्ड्स फंड अल्पावधि में अन्य परंपरागत विकल्पों की तुलना में बेहतर रिस्क रिवार्ड अवसर उपलब्ध कराता है। एक्सिस फ्लोटर फंड, फ्लोटिंग रेट इंस्ट्रूमेंट्स और फिक्स्ड रेट बॉन्ड्स का सक्रियतापूर्वक प्रबंधित पोर्टफोलियो है जिसे फ्लोटिंग रेट विशेषताओं के लिए स्वैप्स के जरिए स्वैप किया जाता है। फ्लोटिंग रेट रणनीतियों का उद्देश्य उन बॉन्ड्स में निवेश करके ब्याज दर जोखिमों को प्रबंधित करना है जहां कूपन मार्केट मूवमेंट्स से लिंक होता है। डेट बाजार के अवसरों का लाभ उठाने के लिए एए इश्यूअर्स में 20 प्रतिशत आवंटन के साथ 80 प्रतिशत एएए / ए + का टार्गेट रखता है।

जेके टायर और की मोबिलिटी सॉल्यूशंस में गठबंधन

उदयपुर (वि.)। ट्रक, बस रेडियल सेगमेंट में भारतीय टायर उद्योग की अग्रणी एवं मार्केट लीडर जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लि. ने की मोबिलिटी सोल्युशंस प्रा. लि. (केएमएस) के साथ समझौते पर हस्ताक्षर करने की घोषणा की है, जिसके एक हजार से ज्यादा आउटलेट्स है एवं भारत का सबसे बड़ा डिजिटल ऑटोमोटिव आफ्टरमार्केट प्लेटफार्म भी है।

दिनेश दासानी, वीपी-रिप्लेसमेंट सेल्स, जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लि. ने कहा कि हम अपने उत्पादों और सेवाओं को ग्राहकों के लिए आसानी से सुलभ बनाने की दिशा में लगातार काम कर रहे हैं। की मोबिलिटी सॉल्यूशंस के साथ यह रणनीतिक साझेदारी न केवल ग्राहक को 24 घंटे सहायता प्रदान करने में हमारी मदद करेगी बल्कि देशभर में हमारे सेवा पोर्टफोलियो रेंज को मजबूत करने के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करेगी। इसके साथ, हम विकास के अगले चरण को चलाने के लिए एक बड़ा सेवा नेटवर्क विकसित करने एवं आफ्टरमार्केट टायर सेवा व्यवसाय में सर्वोत्तम प्रकिया प्रदान करने को आशान्वित है

जी श्रीनिवास राघवन, प्रबंध निदेशक, टीवीएस ऑटोमोबाइल सॉल्यूशंस ने कहा कि हम अपने ग्राहकों को पूर्ण पोर्टफोलियो टायर देखभाल समाधान प्रदान करने के लिए जेके टायर के साथ साझेदारी करके खुश हैं। हम 3 मिलियन से अधिक ग्राहकों को टायर की देखभाल की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम होंगे जो अगले दो वर्षों में 1000 से ज्यादा मल्टी ब्रांड सर्विस नेटवर्क के हमारे डिजिटल इकोसिस्टम के माध्यम से बढ़कर 10 मिलियन ग्राहक हो जाएंगे।

माइक्रो लोन्स द्वारा सफल उद्यमी बनी देविका दीदी

उदयपुर (वि.)। माइक्रो लोन्स-गरीब परिवारों और व्यवसायों को चुनौतीपूर्ण समय में जीवित रहने और फलने-फूलने में मददगार साबित हुआ है। उदयपुर के गोगूंदा गाँव की देविका राजन जिन्हें 'देविका दीदी' के नाम से जाना जाता है, ने हार मानने से इनकार कर दिया और फायनेंशियल क्राइसिस को मैनेज करने का फैसला किया। देविका स्वतंत्र माइक्रोफिन एनबीएफसी-एनएफआई से मात्र 40 हजार रूपये का ऋण प्राप्त कर पूरे गांव के लिये एक सफल उद्यमी का उदाहरण बन गई और अपने कारोबार को जमा लिया है।

पिछले वर्ष लॉकडाउन के चलते देविका के पति देवेंद्र की वेल्डिंग की दुकान बन्द हो गई और छोटी कॉस्मेटिक शॉप बुरी तरह प्रभावित हुई। ऐसे में देविका ने उपहार देने वाली वस्तुओं को अपने व्यवसाय की मुख्य यूएसपी बनाने का फैसला किया। उसने नए उत्पादों को स्टॉक करने वाली नवीनता की दुकान के साथ अपने व्यवसाय का विस्तार करने के लिए स्वतंत्र माइक्रोफिन एनबीएफसी-एमएफआई से माइक्रो लोन के लाभों के बारे में समझ ज्वाइंट लाइबलेटी प्रोग्राम में पंजीकरण किया और 40,000 रुपये की पहली ऋण राशि प्राप्त की। धीरे-धीरे, उसके उत्पादों की मांग बढ़ने लगी जिससे अर्जित लाभ के साथ जीवनस्तर में सुधार हुआ।

हिन्दी व्यंग्य विश्वकोश का प्रकाशन इसी वर्ष

जयपुर (वि.)। हिंदी व्यंग्य के विश्वकोश का प्रकाशन किया जा रहा है जिसमें व्यंग्यकारों के परिचय से लेकर उनकी रचनात्मक उपलब्धियों की जानकारी उपलब्ध होंगी। इस कोश में पूरी दुनिया से हिंदी व्यंग्य लेखकों

की महत्वपूर्ण जानकारी प्रकाशित की जाएगी। यह मुद्रित और इंटरनेट दोनों माध्यम से उपलब्ध होगी।

वरिष्ठ व्यंग्यकार फारूक आफरीदी ने बताया कि हिन्दी व्यंग्यकोश का सम्पादन व्यंग्यकार प्रो. राजेशकुमार और साहित्यकार डॉ. संजीव कुमार कर रहे हैं। इसमें सभी व्यंग्यकारों के नाम, जन्मतिथि, पता, प्रकाशित कार्य, सम्मान आदि का विवरण होगा। साथ ही इसमें व्यंग्य के संकलनों और पत्रिकाओं की जानकारी भी शामिल की जाएगी। कोश का प्रकाशन इंडिया नेटबुक्स, दिल्ली द्वारा किया जा रहा है।

'दो घंटे में होम डिलीवरी' सर्विस में फैशन कलेक्शन 'स्टेप आउट इन स्टाइल' भी शामिल

उदयपुर (वि.)। लॉकडाउन के दौरान ग्राहकों की दैनिक जरूरत की चीजों की आपूर्ति सुनिश्चित करने के उद्देश्य से शुरू की गई 2-आवर होम डिलीवरी यानी दो घंटे में होम डिलीवरी सर्विस को जबर्दस्त प्रतिक्रिया मिलने के बाद बिग बाजार और एफबीबी ने इस सर्विस के दायरे में नए फैशन कलेक्शन 'स्टेप आउट इन स्टाइल' को भी शामिल कर लिया है।

पवन सारदा, सीएमओ - डिजिटल, मार्केटिंग और ई-कॉमर्स, फ्यूचर ग्रुप ने कहा कि ग्राहक Shop.BigBazaar.com पर जाकर इस नए फैशन कलेक्शन को खरीद सकेंगे और दो घंटे में उनके घर पर उसकी डिलीवरी कर दी जाएगी। बिग बाजार और एफबीबी इस उद्योग की इकलौती कंपनी हैं, जो फैशन सेग्मेंट में दो घंटे में घर पर डिलीवरी की सुविधा दे रही हैं और ग्राहकों को ऑनलाइन ऑर्डर की सुविधा देने में अपने जबर्दस्त स्टोर नेटवर्क का लाभ उठा रही हैं।

नया फैशन कलेक्शन भारत के 144 शहरों व कस्बों में 352 बिग बाजार एवं एफबीबी स्टोर पर उपलब्ध कराया गया है। ग्राहक अपने घर में आराम और सुरक्षा से अपने ऑर्डर दे सकते हैं और 2 घंटे के भीतर उनकी डिलीवरी पा सकते हैं। नया फैशन कलेक्शन ग्राहकों को उनकी जेब पर भारी पड़े बिना शानदार और अल्ट्रा-ट्रेंडी फैशन की एक बड़ी रेंज में से चुनने का मौका देता है। ग्राहकों के पास 299 रुपये से शुरू होने वाली किफायती ड्रेस, ट्यूनिक्स, पलाजो, टॉप, पोलो टीज, शर्ट और शॉर्ट्स में से चुनने का विकल्प रहेगा।

'मेवाड़ की दिव्य धरोहर' विशेषांक विमोचित

उदयपुर (वि.)। महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन उदयपुर के अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी श्रीजी अरविन्दसिंह मेवाड़ ने 'निधि दर्पण' विशेषांक 'मेवाड़ की दिव्य धरोहर' का विमोचन किया।

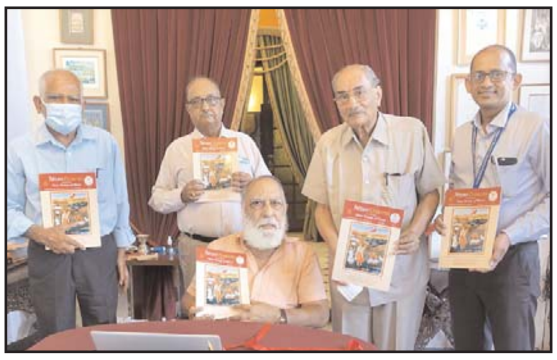

श्रीजी ने बताया कि देवालय आस्था के अटूट स्थल हैं। मेवाड़ में शैव सम्प्रदाय के शिवालयों के साथ ही कई सुविख्यात शक्तिपीठ भी हैं, जहां श्रद्धालु दृढ़ विश्वास से आराधना करते हैं। मेवाड़ में सनातन एवं वैष्णव सम्प्रदाय के कई विश्वप्रसिद्ध मन्दिर एवं हवेलियां भी बनी हुई हैं। मेवाड़ के महाराणाओं ने शैव सम्प्रदाय के साथ ही अन्य सम्प्रदायों को भी पूरा मान-सम्मान प्रदान किया एवं उनका रक्षण किया।

इस अवसर पर निधि दर्पण के संयोजक डॉ. बी. पी. भटनागर, डॉ. एम. एल. नागदा, प्रो. ललित पाण्डे तथा फाउण्डेशन के उप सचिव डॉ. मयंक गुप्ता उपस्थित थे। इंटेक उदयपुर चेप्टर की ओर से प्रकाशित निधि दर्पण 'मेवाड़ की दिव्य धरोहर' विशेषांक शोधार्थियों एवं जिज्ञासुओं के लिए लाभप्रद सिद्ध होगा।

शब्द रंजन--- ज्ञान रंजन और बहु रंजन भी

शब्द रंजन केवल शब्दों का रंजन ही नहीं, सरस्वती का अनुरंजन भी है।

इसमें आपकी बड़भागी आहुति इस रूप में भी हो सकती है-

अपने प्रतिष्ठान तथा प्रियजनों की स्मृति निमित्त विज्ञापन सहयोग करें।

मुख पृष्ठ	10,000/- रूपये
अंतिम पृष्ठ	7000/- रूपये
साधारण पृष्ठ	5000/- रूपये
आधा पृष्ठ	3000/- रूपये
चौथाई पृष्ठ	2000/- रूपये

सदस्यता शुल्क :

संरक्षक	11000/- रूपये
विशिष्ट सदस्य	5000/- रूपये
आजीवन सदस्य	3000/- रूपये
शब्द रंजन के सहयात्री	1500/- रूपये
साहित्यिक चौपाल	1000/- रूपये
वार्षिक संस्थागत	500/- रूपये
वार्षिक व्यक्तिगत	300/- रूपये

Shabd Ranjan, UCO BANK,
Bhupalpura Branch, Udaipur,
a/c no. 18450210000908,
IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c

सुविधा और सुरक्षित प्राप्ति के लिए कृपया रचनाएं, समाचार एवं विज्ञापन आदि ई-मेल से भेजें।

shabdranjanudr@gmail.com

APPLY NOW

SAI TIRUPATI UNIVERSITY

(Established by the Rajasthan State Legislative Assembly as per Sec. 2(f) of UGC Act 1956.)

Constituent Colleges

PACIFIC INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES

VENKATESHWAR INSTITUTE OF PHARMACY

VENKTESHWAR COLLEGE OF PHYSIOTHERAPY

VENKTESHWAR SCHOOL OF NURSING

VENKTESHWAR COLLEGE OF NURSING

ADMISSIONS OPEN 2021-22

Contact: 9587890082, 9116132834

Email: admission@saitirupatiuniversity.ac.in

Web: http://www.saitirupatiuniversity.ac.in

Admission open

B. Sc. (Nursing) Approved by INC

Duration : 4 years

Eligibility : 10+2 (Science Biology) with English

M. Sc. (Nursing) Approved by INC

Medical Surgical Nursing, Community Health Nursing, Obstetrics & Gynecological Nursing, Pediatric Nursing / Child Health Nursing, Psychiatric Nursing / Mental Health Nursing

Duration : 2 years

Eligibility : B.Sc. (Nursing)

BPT

Duration : 4 Years + 6 Months Intern.

Eligibility : 10+2 Science(Biology)

B. Pharm. Approved by PCI

Duration : 4 years

Eligibility :10+2 Science(Biology/Maths) with English

D. Pharm. Approved by PCI

Duration : 2 years

Eligibility : 10+2 Science(Biology/Maths) with English

M.Sc. (Medical Sciences)

Anatomy, Biochemistry, Microbiology, Pharmacology, Physiology

Duration : 3 years

Eligibility: B.P.T., B.Sc.(Medical), BHMS,BAMS, BDS, MBBS, B.Sc.(Biotech), B.Pharma

Other Courses Offered

MBBS

MD/MS

Ph.D.

GNM

SALIENT FEATURES

Highly Qualified & Professional Faculty

Practical Exposure at its own 800 Bedded Multi Super speciality Hospital

Govt. Scholarship Available

Modern & Highly Equipped Labs, Classrooms

Wi-Fi Campus & Digital Library

साई तिरूपति विश्वविद्यालय, उमरड़ा, उदयपुर

अम्बुआ रोड़, उमरड़ा, उदयपुर (राज.) 313015 Phone: 0294-3510000, Mob. 8696440666

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर – 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल – 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।